ੴ

# गुरबाणी सिद्धांत

# God's Word-Principles

लेखक

बलजीत सिंह

आई. पी. एस. (रिटा.)

ੴ

# गुरबाणी सिद्धांत

# God's Word-Principles

लेखक

बलजीत सिंह

आई. पी. एस. (रिटा.)

# स. बलजीत सिंह जी आई. पी. एस. (रिटा.)

( 11-03-1937 से 26-03-2006 )

# गुरबाणी सिद्धांत
# God's Word - Principles

लेखक : बलजीत सिंह
आई. पी. एस. (रिटा.)

*प्रकाशक :*

गुरि संगति
द्वारा बलजीत सिंह
सतिसंग
1119, फेज़-1, अरबन असटेट, जालंधर - 144022
E-mail : ikoankarsatsang@rediffmail.com
Website : www.ikoankarsatsang.com

प्रभु रूप गुरमुखि प्यारे डा. करतार सिंह जी की प्यार भरी याद को
समर्पित, जिन्होने सेवक को नाम बाणी की ओर प्रेरित किया।

# अनुवाद मूलमंत्र

रब जी एक है, सदा-सदा है, सब कुछ करता है वह आपे।
सब में समाया, कभी नही डरता, वैर किसी से कभी न थापे।
अमर हसती, जन्म नहीं लेता, अपने आप से आपे।
ऐसा प्रभु ढूँढे नहीं मिलता, गुरू कृपा से जापे।

# तालिका


| क्रमांक | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|
| 1. | गुरबाणी कमानी है | 1 |
| 2. | प्रभु जी | 7 |
| 3. | गुरू, सतिगुरू | 13 |
| 4. | मनुष्य जाती | 19 |
| 5. | जगत रचना | 23 |
| 6. | जीवन उ(श्य | 31 |
| 7. | हुक्म-उपमा और प्रार्थना | 45 |
| 8. | नाम रस | 49 |
| 9. | साधु संगति | 57 |
| 10. | नाम अभ्यास की विधि | 61 |
| 11. | जन्म व्यर्थ | 69 |
| 12. | कर्म पफल | 75 |
| 13. | कुसंगति और संत संगति | 85 |
| 14. | व्यर्थ कर्म | 93 |
| 15. | सारांश | 97 |
| अ. | गुरबाणी सिद्धांत (कविता में) | 105 |

# INDEX


| No. | Title | Page |
|---|---|---|
| 1. | God's Word is to be obeyed. | 2 |
| 2. | God. | 8 |
| 3. | Saint - The Blessed Soul. | 14 |
| 4. | Human Race. | 20 |
| 5. | Creation. | 24 |
| 6. | Purpose of Human Life. | 32 |
| 7. | Order-Praise and Prayer. | 46 |
| 8. | Elixir of Naam. | 50 |
| 9. | Company of a Blessed Soul. | 58 |
| 10. | How to Recite God's Name. | 62 |
| 11. | Useless Human Life. | 70 |
| 12. | Reaction of Action. | 76 |
| 13. | Society - Bad & Good. | 86 |
| 14. | Fruitfless Actions. | 94 |
| 15. | Gist of Instruction. | 98 |

# *1. गुरबाणी कमानी है*

*गुरबाणी प्रभु जी का हुक्म है और प्रभु जी का रूप है। बाणी भगवान है और भगवान बाणी है। जीव ने इस हुक्म को मानना है। गुरबाणी अगाध बोध (अनंत ज्ञान) है। इस की पूरी समझ केवल प्रभु कृपा प्राप्त आत्मा, जो गुरबाणी को कमा (मान) कर ईश्वर के चरणों में समा जाए, को होती है। ऐसी आत्मा साधु, संत, गुरू, सतिगुरू, महापुरूष, गुरसिख, गुरमुखि, दास, जन, सेवक, भगत है।*

# 1. GOD'S WORD IS TO BE OBEYED

The God's Word (Gurbani) is His order and is merged with Him. The Word is God and God is the Word. The order is meant to be obeyed by human beings. The God's Word is unfathomable and only a blessed soul, who has merged in the lotus feet of the Lord, by obeying the God's word, understands its real import. Such a soul is called a Saint (sadh / sant), a Guide (Guru), True Guide (Satguru), Great man (Mahapurakh), True Disciple of a Guide (Gursikh / Gurmukh), a servant of God (Das/Jan/Sewak), a Devout (Bhagat), etc.

## *सत्यापन के लिए गुरबाणी*

१. धुर की बाणी आई ॥
तिनि सगली चिंत मिटाई ॥ प्रष्ठ ६२८

आदि पुरख से बाणी उत्पन्न हुई है
और इस ने सारी चिन्ता दूर कर दी है।

From the 'Priminal one', has
emanated the 'Word' and it has
effaced all anxiety.

२. ता मै कहिआ कहणु जा तुझै कहाइआ ॥ प्रष्ठ ५६६

जो भी मैनें कहा है आप ;प्रभु जी
की तरपफ से हुक्म होने पर कहा है।

I have said every thing under
Your directions.

३. हउ आपहु बोलि ना जाणदा मै कहिआ सब हुकमाओ जीउ ॥ प्रष्ठ ७६३

मैं स्वयं तो बोलना नहीं जानता। मैं
वही कह रहा हूँ जो मेरे प्रभु का हुक्म
है।

By myself I know not what to
speak. I said all, that is the
command of my Lord.

४. वाहु वाहु बाणी निरंकार है तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ प्रष्ठ ५१५

वाह शब्द है जो स्वरूप के बिना
स्वामी है। शब्द जितना बड़ा और कोई
नहीं है।

Wonderful is the 'Word' which
is the Formlesss Lord. There is
none so great as the 'Word'.

५. बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥
गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरू निसतारे ॥ प्रष्ठ ६८२

बाणी भगवान है और भगवान बाणी
है। बाणी में सारे अमर हस्ती समाई है।
अगर सेवक गुरबाणी को कमाए (माने)
तो ईश्वर अवश्य ही उस का उद्धार कर
देता है।

The 'Word' is God and God is
the 'Word'. Every where in the
'Word' the Timless Lord
prevades. If the attendant acts
accroding to the God's 'Word',
God surely saves him.

६. सतिगुर बचन बचन है सतिगुर पाधरु मुकति जनावैगो ॥ प्रष्ठ १३१०

प्रभु बचन है और बचन प्रभु है। बचन कल्याण का रास्ता बताता है।

God is the Word and the Word is God. The 'Word' shows the way to emancipation.

७. गुरि कहिआ सा कार कमावहु ॥
सबदु चीन्हि सहज घरि आवहु ॥ प्रष्ठ ८३२

गुरू का बताया हुआ काम करो। शब्द की अराधना द्वारा आनंद में प्रवेश करोगे।

Do as the Guru enjoins upon you. Meditating on the 'Word' you shall enter the Home of bliss.

८. मंने नाउ सोई जिणि जाइ ॥
अउरी करम न लेखै लाइ ॥ प्रष्ठ ९५४

जो नाम (शब्द) अनुसार कर्म करता है, वह जीत जाता है। अन्य कर्मों से नहीं जीत सकता (अहंकार को)।

He who acts according to the Name (the 'Word') becomes victorious. Other deeds are useless (so far as conquering ego is concerned).

९. नानक सबदु अपारु तिनि सभु किछु सारिआ ॥ प्रष्ठ ३२०

हे नानक, शब्द (बाणी) सीमा के बिना ;अनंतद्ध है, जिस ने सब कुछ ठीक कर दिया है।

O' Nanak, infinite (bound-less) is the 'Word' which has solved all problems.

१०. सबदु गुर पीरा गहिर गंभीरा बिनु सबदै जगु बउरानं ॥ प्रष्ठ ६३५

गहरा और अथाह शब्द ही गुरू और पीर है। शब्द के बिना दुनिया पागल होई हुई है।

The profound and fathomless 'Word' is the Guru and spirtual guide. Without the 'Word' the world has gone mad.

११. राम संत महि भेदु किछु नाही प्रष्ठ २०८

व्यापक प्रभु और उसके संत में कोई अन्तर नहीं है।

There is no difference between the prevading Lord and His saint.

१२. नानक साध प्रभ भेदु न भाई ॥ प्रष्ठ २७२

हे नानक, उस के संत और स्वामी मे कोई अन्तर नहीं है, मेरे भाई।

O' Nanak, there is no difference between His saint and the Lord, my brother.

१३. गुरू सिखु सिखु गुरू है एको गुर उपदेसु चलाए ॥ प्रष्ठ ४४४

गुरू का सिख और गुरू एक रूप हैं। दोनों गुरमति (ईश्वर के उपदेश) को ही प्रचलित करते हैं।

Guru's sikh and Guru are one and the same and both propagate Guru's (God's) instruction.

१४. गुर महि आपु समोइ सबदु वरताइआ ॥ प्रष्ठ १२७६

सांई ने स्वंय को गुरू में लीन किया है और गुरू के द्वारा हुक्म की समझ प्रदान करता है।

The Lord has merged His ownself into the Guru through whom He dispenses His Word i.e. instruction.

१५. सतिगुर विचि आपि वरतदा हरि आपे रखणहारु ॥ प्रष्ठ ३०२

सतिगुरू में भगवान स्वयं निवास करता है और स्वयं ही रक्षा करने वाला है।

With in the True Guru, God Himself abides and Himself is the protector.

१६. गुरमुखि राम नाम रंगि राता ॥
नानक गुरमुखि खसमु पछाता ॥ प्रष्ठ ६४२

गुरू समर्पित प्रभु के नाम के प्यार मे रंगा हुआ है। हे नानक, गुरू समर्पित अपने स्वामी को अनुभव करता है।

The Guru-ward is imbued with the love of the Lord's Name. O' Nanak, the Guru-ward realises his Lord.

१७. ठाकुर कउ सेवकु जानै संगि ॥
प्रभ का सेवकु नाम कै रंगि ॥ प्रष्ठ २८५

सेवक जानता है कि उस का स्वामी हमेशा उस के साथ है। स्वामी का सेवक उस के नाम के प्यार मे लीन रहता है।

The slave knows that his Lord is ever with him. The Lord's servant abides in love of His Name.

१८. ऊठत बैठत सोवत नाम ॥
कहु नानक जन कै सद काम ॥ प्रष्ठ २८६

उठते, बैठते, सोते नाम याद करना, प्रभु के सेवक का सदा का व्यवहार है, हे नानक।

To repeat Name whilst standing, sitting or sleeping is ever the avocation of God's slave O' Nanak.

१६. आठ पहर प्रभ बसहि हजूरे ॥
कहु नानक सेई जन पूरे ॥ प्रष्ठ २८६

जो दिन रात स्वामी की हजूरी में निवास करते हैं, वह पूरे सेवक हैं, हे नानक।

Those, who day and night abide in the presence of the Lord, are the prefect servants, O' Nanak.

२०. भगत अराधहि एक रंगि गोबिंद गुपाल ॥ प्रष्ठ ८१६

एक चित्त प्रेम से संत सृजनहार, पालनहार स्वामी का सिमरन (प्यार से याद) करते हैं।

The sanits contemplate the Creator and Sustainer Lord with single minded affection.

# 2. प्रभु जी

*प्रभु जी एक है, सदा सदा है, अनंत गुणों का अनंत भंडार है, अनंत रचना रच कर इस में सारे समाया है और सब कुछ आप कर रहा है। उसका कोई निश्चित नाम नहीं है। भगवान और बाणी को सतिगुरू ने नाम कहा है। केवल उस प्रभु की शरण मे जीव ने जाना है। अन्य किसी देवी देवता की शरण में नहीं जाना। ऐसा प्रभु गुरू कृपा द्वारा मन में प्रगट होता है।*

## 2. GOD

God is one, ever eternal, unfathomable treasure of innumerable virtues. His creation is also infinite; He is omnipresent and is doing everything everywhere. He has got no particular name. Satguru has referred to God and His Word as Naam. The soul has to take only His shelter and seek only His protection and should not seek shelter / protection of any angle(s). God manifests itself in the soul with the grace of a blessed soul (Guru).

## *सत्यापन के लिए गुरबाणी*

१. प्रष्ठ १

ईश्वर केवल एक है। — There is but one God.

२. साहिबु मेरा एको है ॥
एको है भाई एको है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रष्ठ ३५०

मेरा मालिक एक है। एक है और केवल एक है, हे भाई। ठहराव। — My Lord is one, one and only one, O' brother. Pause

३. आदि सचु जुगादि सचु ॥
है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥ प्रष्ठ १

रचना करने से पहले सच )सदा स्थिर), रचना करते समय सच, अब भी सच है और हे नानक, निश्चित ही वह आगे भी सच रहेगा। — Eternal berfore the creation. Eternal in the begining of ages. He is Eternal now and Eternal He, verily shall be O' Nanak.

४. वडे मेरे साहिबा गहिर गंभीरा गुणी गहीरा ॥
कोइ न जाणै तेरा केता केवडु चीरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रष्ठ ६

हे मेरे अथाह गहरे और बड़े मालिक, (तू) गुणों का खज़ाना है। कोई नहीं जानता तेरा कितना बड़ा पसारा है। ठहराव। — O' my Great Fathomless Master (You are) Treasure of Excellences. None knows how much and how great Your creation is. Pause.

५. तेरे कवन कवन गुण कहि कहि गावा तू साहिब गुणी निधाना ॥
तुमरी महिमा बरनि न साकउ तूं ठाकुर ऊच भगवाना ॥ १ ॥ प्रष्ठ ७३४-३५

तेरे कौन कौन से गुण मैं कहूँ, बोलूँ और गाउँ तू, हे स्वामी, गुणों का भंडार है। तेरी महिमा मैं बयान नहीं कर सकता। तू मन बुद्धि से बड़ा (उँचा) मालिक है।

Which merits of Thine should I narrate, recount and sing ? You O' Lord are the Treasure of excellences (virtues). Your praise I cannot describe as You are Lofty, Illustrious Lord (beyond my comprehension).

६. दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ॥ प्रष्ठ ४६३

दूसरी उसने रचना बनाई और इसे में समाया वह रचना को आनंद से देखता है।

Secondly He created the world and seating (prevading) there in, He beholds it with delight.

७. करता पुरखु ॥प्रष्ठ १

सारे समाया सब कुछ कर रहा है।

All prevading & doing every thing (Creator, Sustainer, Destroyer etc.).

८. करि करि देखै कीता आपणा जिउ तिस दी वडिआई ॥ प्रष्ठ ६

रचना रच के, वह, जिस तरह उस हजूर को अच्छा लगता है, अपनी रचना को देख (चला) रहा है।

Having created the creation, He, as it pleases His Honour, beholds His handiwork.

९. सभनी छाला मारीआ करता करे सु होइ ॥ प्रष्ठ ४६६

हर कोई कोशिश करता है (मन इच्छित फल के लिए) पर जो कुछ सृजनहार करता है, केवल वही होता है।

Every one always tries (to achieve results of his choice) but what the Creator does that alone happens.

१०. जे धावहि ब्रहमंड खंड कउ करता करै सु होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रष्ठ ४८८

चाहे कोई आलम और महां दीपो में भागता रहे (सफलता के लिए), केवल वह ही होता है जो सृजनहार करता है। ठहराव ।

Though one may run through the universe and the continents (to seek help or to achieve success), that alone happens what the Creator does. Pause.

११. बलिहारी जाउ जेते तेरे नाव है ॥ प्रष्ठ ११६८

मैं, जितने भी तेरे नाम हैं, उन पर कुर्बान जाता हूँ, हे स्वामी।

I am a sacrifice to all Your Names, as many as they are, O' Lord.

१२. नाम के धारे सगले जंत ॥
नाम के धारे खंड ब्रहमंड ॥ प्रष्ठ २८४

प्रभु जी ने सब जीव बनाए और सब को सहारा दिया हुआ है (सब में रह रहा है)। हरी जी ने बनाए और टिकाए हुए हैं - धरती के खण्ड और सूर्य मंडल (सब में आप रह रहा है)।

God has created and sustains all the creatures. By God are created and sustained the regions of the earth and solar systems.

१३. गुरमुखि बाणी नामु है नामु रिदै वसाई ॥ प्रष्ठ १२३६

हे गुरमुखि, गुरू की बाणी प्रभु नाम है। इस नाम (गुरबाणी) को मन में बसा।

O' Guru ward, the Guru's Word is the Lord's Name. Enshrine His Name (Guru's Word) in the mind.

१४. जपहु त एको नामा ॥
अवरि निराफल कामा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रष्ठ ७२८

एक नाम की अराधना करो। बाकी सब काम निष्फल हैं। ठहराव।

Contemplate only Name (Lord). Unfruitful are all other deeds. Pause.

१५. केवल नामु जपहु रे प्रानी परहु एक की सरनां ॥ प्रष्ठ ६६२

केवल हरी नाम का सिमरन (प्यार से याद) कर, हे प्राणी और केवल एक (प्रभु) की शरण ले।

Contemplate only one Name, O' mortal and seek only one Lord's asylum.

१६. ता की सरनि परिओ नानक दासु जा ते ऊपरि को नाही ॥ प्रष्ठ ८२४

दास नानक ने उस की शरण ली है, जिस से उपर कोई है ही नहीं।

Slave Nanak has entered the sanctury of Him, higher than whom there is none.

१७. गुर प्रसादि ॥ प्रष्ठ १

गुरू की कृपा द्वारा (वह प्राप्त होता है)।

By the Guru's Grace (He is obtained).

१८. एकंकारु सतिगुर ते पाईऐ हउ बलि बलि गुर दरसाइणा ॥ प्रष्ठ १०७८

एक स्वामी सच्चे गुरू से (द्वारा) ही प्राप्त होता है। कुर्बान, कुर्बान मैं जाता हूँ अपने गुरू के दर्शन से।

The one Lord is obtained from (through) the True Guru. I am a sacrifice, a sacrifice unto the vision of my Guru.

१९. कहु नानक गुर बिनु नही तरीऐ इहु पूरन ततु बीचारा ॥ प्रष्ठ ६११

नानक कहता है कि गुरू बिना (जीव का) उद्धार नहीं होता। सभी सोच वीचारों का यह पूरा सार है।

Says Nanak, without the Guru, one swims not across (the ocean of the creation). This is the perfect essence of all the deliberations.

२०. बिनु साध न पाईऐ हरि का संगु ॥ प्रष्ठ ११६६

संत के बिना हरी की संगति
(दर्शन) नहीं मिलती।

Without the Saint, God's
association is obtained not

q q q

# 3. गुरू, सतिगुरू

गुरू वह आत्मा है जो प्रभु चरणों में समाई है और बाणी उसको प्रभु से आती है। वह आत्मा जीवों को बाणी जपवाती है, सुदृढ़ करवाती है, जीवन में लाने के लिए प्रेरित करती है, भिन्न भिन्न अंगो से समझाती है और शब्द द्वारा प्रभु के साथ जोड़ती है और नाम का ध्यान करवाती है। सच्चा गुरू अपना नाम नहीं जपवाता, अपना ध्यान नहीं करवाता, अपनी पूजा नहीं करवाता, संगति पर बोझ नहीं बनता, दुख सुख बराबर जानता है, परोपकारी होता है, आज्ञा को मीठा करके मानता है, दुश्मन और मित्र समान जानता है, सब का भला चाहता है और सब को नाम जपने के लिए प्रेरित करता है, काम आदि उस के नियंत्रण में होते हैं। ऐसी आत्मा, भगवान और बाणी एक रूप होते हैं और सदा कायम हैं। आप पार हो गया है, सदा सदा प्रभु के गुण गाता है और उस की संगति भी पार हो जाती है।

# 3. SAINT - THE BLESSED SOUL

Guru is a blessed soul who is merged in the Lord and receives the Word (instruction) directly from Him. He helps others to recite/repeat the Word, to understand and imbibe its import, to live as per the instruction contained in the Word, to unite with God with the help of the Word and to fix attention on Naam i.e. God and His Word. A true Guru does not guide others to seek his protection to sing his praises, to pray to him, to submit to his will or to fix attention on him. He does not become a burden on others, considers comforts and miseries alike, is helpful to others, has compassion even for foes, wants everyone to flourish, considers the doing of the Lord as sweet and guides and helps all to recite Naam. He has subjective control over lust, wrath, greed, attachment and pride. Such a soul is merged with God and His Word and is ever eternal. Such a soul has crossed the ocea of creation, ever sings the praises of the Lord and his companions also cross the ocean of creation.

## सत्यापन के लिए गुरबाणी

१. गुर महि आपु रखिआ करतारे ॥ प्रष्ठ १०२४

गुरू के अंदर सृजनहार ने स्वयं को रखा है।

Within the Guru, the creator has placed His own self.

२. सो सतिगुरु जिसु रिदै हरि नाउ ॥ प्रष्ठ २८७

वह सच्चा गुरू है जिस के मन में हरी नाम का निवास है।

He is the True Guru within whose mind God's Name is enshrined.

३. ब्रहमे बिंदे सो सतिगुरु कहीऐ हरि हरि कथा सुणावै ॥ प्रष्ठ १२६४

केवल वह ही सच्चा गुरू है जिस ने ईश्वर को अनुभव किया है। वह ईश्वर की कथा वार्ता करता है।

He alone is the True Guru who realises God. He utters the Lord's discourse.

४. रामु जु दाता मुकति को संतु जपावै नामु ॥ प्रष्ठ १३७३

प्रभु जी मुक्ती देता है और संत उस का नाम जपवाता है।

God gives salvation and the saint helps & persuades others to repeat His Name.

५. गुर का बचनु जपि मंतु ॥ एहा भगति सार ततु ॥ प्रष्ठ ८६५

गुरू की बाणी का जाप कर। यह उपदेश है। सांई की प्रेममयी सेवा का यही असली निचोड़ है।

Utter the Guru's Word. This is His instruction. This is real essence of the Lord's devotional service.

६. सिख की गुरु दुरमति मलु हिरै ॥
गुर बचनी हरि नामु उचरै ॥ प्रष्ठ २८६

अपने सिख की मंदबुद्धि की गंदगी
गुरू जी धे देते हैं। गुरू के शब्द के
द्वारा सिख भगवान का नाम जपता है।

The Guru washes of the filth of
the evil intelect of his disciple.
Through Guru's word the disciple
repeats the Name of God.

७. प्राणी एको नामु धिआवहु ॥
अपनी पति सेती घरि जावहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रष्ठ १२५४

हे प्राणी, एक ईश्वर का ध्यान
पक्का कर। इस तरह तू इज़्ज़त के
साथ अपने धम को जाऐगा। ठहराव।

O' Mortal, meditate on one
God. In this manner you shall go
to your home with honour. Pause.

८. आठ पहर निकटि करि जानै ॥
प्रभ का कीआ मीठा मानै ॥ प्रष्ठ ३६२

आठों पहर साधु प्रभु जी की
हजूरी अनुभव करता है, उसकी आज्ञा
को मीठा करके मानता है और उस में
ही सुख अनुभव करता है।

Throughout the eight watches
(24 hours i.e. day and night) the
saint realies the nearness of the
Lord. What-ever the Lord does,
the saint welcomes it and enjoys His doing.

९. जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥
सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रष्ठ ६३३

जो मनुष्य दुख में दुख नहीं मानता,
जिस पर सुख और डर असर नहीं
करते और जो सोने और मिट्टी को
बराबर जानता है। ठहराव। (वह साधु है)।

The man, who in pain/misery
feels it not, who is not affected by
comforts and fear and deems gold
as dust. Pause. (He is a saint).

१०. सोई सतिगुरु पुरखु है जिनि पंजे दूत कीते वसि छिके ॥ प्रष्ठ ३०४

वह ही सर्व शक्तिमान सतिगुरू है
जिसने अपने पांचो विषय विकार कस
कर अपने नियंत्राण में कर लिए हैं।

He is the Omnipotent True
Guru who has resolutely subdued
his five evil passions.

११. जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए ॥
जीअ दानु दे भगती लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए ॥ प्रष्ठ७४६

जन्म-मुत्यु दोनों से उपर हैं, जगत मित्र पुरूष, जो औरों का भला करने के लिए आते हैं। वह रूहानी जीवन की दात देते है, जीवों को प्रभु के प्रति श्रद्धा प्रेम के साथ जोड़ते हैं और उनको प्रभु के साथ मिला देते हैं।

Above both, birth and death are the philanthropic persons who come to do good to others. They give the gift of spirtual life, apply men to divine devotion and make them meet with God.

q q q

# 4. मनुष्य जाति

मनुष्य जाती एक है। जात, पात, देशों, धर्मो का विभाजन मनुष्य ने किया है। हर मनुष्य गुरबाणी को मान कर प्रभु चरनों में समा सकता है।

## 4. HUMAN RACE

Human race is one. The divisions of classes, castes, countries, religions etc. have beem created by man. Any man can merge with God by living acording to the God's Word i.e. obeying the instruction contaned in the God's Word.

## सत्यापन के लिए गुरबाणी

१. मन्ने नाउ सोई जिणि जाइ ॥
अउरी करम न लेखै लाइ ॥ पंना ९५४

1. जो प्रभु जी की बाणी को मानता है वह जीत जाता है और कोई काम लाभदायक नहीं (जहाँ तक ताया से मुक्ति का सबंध है)।

1. He who lives accroding to the God's Word becomes victorious. No other deed/action is of any account (so far as emancipation of the soul from the manmmon is concerned).

२. अगै जाति न जोरु है अगै जीउ नवे ॥ पंना ४६९

2. परलोक में जात पात और बल काम नहीं आते। आगे प्राणी का नये जीवों से सामना होता है।

2. In the next world caste and power count not, hereafer the soul has to deal with new beings.

३. भई परापति मानुख देहुरीआ ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥ पंना ३७८

3. यह मनुष्य शरीर तेरा सृजनहार का मिलने का मौका है।

3. You have obtained the human body. This the trun (chance) to meet the Creator.

४. आइओ सुनन पड़न कउ बाणी ॥
नामु विसारि लगहि अन लालचि बिरथा जनमु पराणी ॥ पंना १२१९

4. जीव गुरबाणी सुनने और पड़ने के लिए आया है। गुरबाणी को भुला कर जीव और इच्छाओं के साथ जुड़ता है और जन्म बेकार गवा देता है।

4. The mortal has come to hear and utter the (God's) Word. Forgetting the God's Word the soul is attached to other desires. Vain is your life, O' mortal.

५. गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरू निसतारे ॥ पंना ९८२

5. अगर सेवक, जो गुरबाणी कहती है उस को माने तो गुरू जी अवश्य उस का उद्धार कर देते हैं।

5. If the attendant acts upto what the God's Word enjoins, the Guru surely saves him.

६. सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥
हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥ पंना २६६

6. सारे धर्मो में से उत्तम धर्म प्रभु जी का नाम जपना है। यह करम माया से जीव को अलिप्त रखता है।

6. Of all religions, the best religion is to repeat God's Name. This deed is unattached action i.e. it does not attach the soul to mammon.

७. सति पुरखु जिनि जानिआ सतिगुरु तिस का नाउ ॥ पंना २८६

7. जिस से सदैव समर्थ (प्रभु जी) को अनुभव कर लिया है। उसका नाम सच्चा गुरू है।

7. He who has realised the True Almigrty (God) is called the True Guru.

८. कोई गावै को सुणै हरि नामा चितु लाइ ॥
कहु कबीर संसा नही अंति परम गति पाइ ॥ पंना ३३५

8. जो कोई ध्यान जोड़ कर प्रभु को गाता या सुनता है, कबीर कहता है निःसन्देह अंत को महान पदवी पा लेता है।

8. Whosoever attentively sings or hears God's Name, says Kabir, doubtlessly he obtains the highest dignity at last.

९. जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले होर केती छुटी नालि ॥ पंना १४६

9. जिन्होने नाम (प्रभु जी) का ध्यान पक्का किया है और यह कठोर परिश्रम करके गये है, हे नानक उनके चेहरे (प्रभु दरगाह में) रोशन होगें और उनके साथी संगी भी मुक्ति पा जायेंगे।

9. Those who have fixed their attention on the Name (God) and have departed after putting in this toil, O' Nanak their faces shall be bright (in the Lord's court) & their companions shall be emancipated along with them.

१०. तूं सचा साहिबु सिफति सुआलिउ
जिनि कीती सो पारि पइआ ॥ पंना ४६९

10. तू सच्चा स्वामी है, तेरी कीर्ति सुंदर है। जो कीर्ति गाता है वह पार उतर जाता है।

10. You are the True Lord and beautiful is Your praise. He who hymns it swims across.

११. नानक भउजलु पारि परै जउ गावै प्रभ के गीत ॥ पंना ५३६

11. हे नानक, अगर प्राणी स्वामी के गुण गाये तो भयानक संसार समुद्र से पार उतर जाता है।

11. O' Nanak, if mortal sings songs of the Lord's praise, he croses over the terrible world ocean.

# 5. जग रचना

जगत की रचना सब झूठ है। इसमें मनुष्य जन्म सर्वश्रेष्ठ है। जीव जरूरतों के बंधे हुए हैं। संसार में कोई किसी का नहीं है। यह मोह ही अहंकार है जो प्रभु ने जीवों को लगाया है और जीवों ने लालच अधीन करम कर-कर के बढा लिया है। माया के मोह की कालिख बड़ने से मन काला हो गया है और निरमल प्रभु जी से दूर है। अहंकार, प्रभु के गुण गाने से और प्रभु जी से प्यार हो जाने से कम होता है और पूरन प्यार हो जाने पर खत्म हो जाता है।

# 5. CREATION

All creation is false-destructible and perishable. Human life is the best of all lives. Human beings are attached to each other because of their needs and requirements and infact nobody belongs to anyone. It is attachement to creation that creates misery for the soul. This attachement is ego, which is ingrained in the soul by the Lord and individuals have increased it manifold by actions done under the influance of greed and avarice. The soul has become extremely impure due to this increased ego and has distanced itself from the pure Lord. Ego decreases if the soul sings the praise of the Lord and develops love and affection for the Lord and is destroyed if the soul is totally absorbed in the love and affection for the Lord.

## सत्यापन के लिए गुरबाणी

१. जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥
कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीति ॥ पंना १४२९

1. संसार की बनावट सब झूठी है। यह बात मान ले, हे मित्रा, नानक कहता है रेत की दीवार की तरह यह भी कायम नहीं रहती।

1. Totally false is the structure of the world. Believe this O' my friend. Says Nanak, like the wall of sand, it remains not permanent.

२. कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारु ॥ पंना १४२९

2. नानक कहता है, कुछ भी सदा स्थिर नहीं। दुनिया एक सपने जैसी है।

2. Says Nanak, nothing is everlasting, the world is like a dream.

३. कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु ॥ पंना ४६८

3. झूठा है राजा, झूठी है प्रजा और झूठा है सारा संसार।

3. False is the king, false the subjects and false is the entire world.

४. झूठ समग्री पेखि सचु करि जानिआ ॥ पंना ७०७-८

4. झूठे साजो-सामान को देख कर आदमी इस को सच कर के जानता है।

4. Beholding the false paraphernalia (matter) man deems it to be true.

५. अवर जोनि तेरी पनिहारी ॥
इसु धरती महि तेरी सिकदारी ॥ पंना ३७४

5. अन्य जीव जन्तु तेरे पानी भरने वाले हैं। इस धरती के उफपर तेरा राज पाठ है ;हे इन्सानद्ध।

5. Other creatures are your water carriers. In this world your's is the sovereignity (O'man).

६. जगत मै झूठी देखी प्रीति ॥
अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥पंना ५३६

6. इस दुनिया मैं मैने ;एक दूसरे के साथद्ध प्यार को झूठा देखा है। क्या पत्नी और क्या पती सब अपने सुखों के साथ जुड़े हैं।

6. Is this world I have seen the love (for each other) to be false. Even wife and her husband are concerned with their own comforts.

७. प्रीतम जानि लेहु मन माही ॥
अपने सुख सिउ ही जगु फाँधिओ को काहू को नाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंना ६३४

7. हे प्यारे, अपने मन में यह मान ले कि संसार अपने सुखों के साथ जुड़ा हुआ है और कोई किसी का ;मित्राद्ध नहीं है। ठहराव।

7. O' dear realise it in your mind. The world is entangled in its own comfort and no body is any one else's friend. Pause.

८. हउमै माइआ मोहणी दूजै लगै जाइ ॥ पंना ८५३

8. मोहित करने वाली माया ;रचनाद्ध के द्वारा दूसरे का प्यार प्रगट होता है और इन्सान दवैत भाव के साथ जुड़ जाता है।

8. Through fascinating mammon, wells up ego and man is yoked to duality.

९. माइआ होई नागनी जगति रही लपटाइ ॥
इस की सेवा जो करे तिस ही कउ फिरि खाइ ॥ पंना ५१०

9. माया नागिन बनी है। संसार इसने लपेट में लिया हुआ है। जो इस की सेवा करता है, अंत में यह उस को खा जाती है।

9. Mammon is a she - serpent which is clinging to the world. He who serves her, she ultimately devours him.

१०. जनमु बृथा जात रंगि माइआ कै ॥ पंना ३७८

10. दुनियादारी ;माया-रचनाद्ध की प्रीत में मनुष्य जीवन व्यर्थ बीता रहा है।

10. In the love of wordliness (mammon) the human life passes in vain.

११. माइआ ममता करतै लाई ॥
एहु हुकमु करि सृसटि उपाई ॥ पंना १२६१

11. सृजन्हार प्रभु ने माया का मोह ;इस मन कोद्ध लगाया है। यह कानून बना, उसने संसार रचा है।

11. The Creator - Lord has attached mammon and worldly love (to this mind). Enacting this law, He has created the world.

१२. हउमै एहो हुकमु है पइऐ किरति फिराहि ॥ पंना ४६६

12. स्वामी की इच्छा में, अपने अहंकार के कारण, जीव अपने पूर्व कर्म अनुसार भटकते हैं।

12. This is the God's will that on account of ego souls wander according to their past deeds.

१३. जो जो करम कीओ लालच लगि
तिह तिह आपु बंधाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंना ७०२

13. जो भी काम कोई लालच अधीन करता है, उन सब से अपने आप को जकड़ लेता है। ठहराव।

13. Whatever deeds one does attached with avrice, with them all, one binds one self down. pause.

१४. जनम जनम की इसु मन कउ मलु लागी
काला होआ सिआहु ॥ पंना ६५१

14. कई जन्मों की मैल इस मन को लगी है और यह गाड़ा काला हो गया है।

14. The scum of so many births is attached to this soul and it has become pitch black.

१५. हरि जीउ निरमल निरमला निरमल मनि वासा ॥ पंना ४२६

15. पापों का नाश करने वाला ;प्रभुब्द्ध पवित्रों का परम पवित्रा है और पवित्रा हृदय के अंदर निवास करता है।

15. The Destroyer of sins is the purest of the pure and abides in the pure mind.

१६. हउमै जाई ता कंत समाई ॥ पंना ७५०

16. अगर अंहकार मिट जाए तो आत्मा प्रभु में समाती है।

16. If ego is efaced then the soul merges with the Lord.

१७. भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥
पाणी धोतै उतरसु खेह ॥ पंना ४

17. गुनाहों के साथ मैली हुई हुई आत्मा, हरी नाम की प्रीति द्वारा धुलती है।

17. The soul, defiled with sins is cleaned with the love of God's Name.

१८. गुन गावत तेरी उतरसि मैलु ॥
बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु ॥ पंना २८६

18. प्रभु जी के गुण गाने से तेरी मैल धेई जाएगी और सारे पफैला हुआ अंहकार का ज़हर दूर हो जाएगा।

18. By chanting God's glories the filth shall be washed off and the all spreading poison of ego shall depart.

१६. मन रे किउ छूटहि बिनु पिआर ॥ पंना ६०

19. हे मेरे मन, ;प्रभु जी के साथब्द्ध प्रीति ;कियेब्द्ध बिना तेरा छुटकारा कैसे हो सकता है ?

19. O' my mind how can you be emancipated without (enshrining) love (for God in the mind)

## २०. रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी मछुली नीर ॥ पंना ६०

20. हे मेरे मन, प्रभु जी से ऐसा प्रेम कर जैसा मछली का पानी के साथ है।

20. O' my mind enshrine such love for God (in the mind) as the fish has for water.

## २१. ऐसी प्रीति करहु मन मेरे ॥
## आठ पहर प्रभ जानहु नेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंना ८०७

21. हे मेरे मन, प्रभु के साथ ऐसा प्रेम कर कि आठों पहर वह तुझे अत्यंत नजदीक मालूम हो। ठहराव।

21.Enshrine such affection for the Lord, O'my mind that throughout the eihgt watches of the day, He may seem close to you.Pause.

## २२. जा की प्रीति गोबिंद सिउ लागी ॥
## दूखु दरदु भ्रमु ता का भागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंना १८६

22. जिस का प्यार सृजनहार प्रभु के साथ हो जाता है उस की बीमारी ;अंहकार कीध्द्र पीड़ा और भ्रम खत्म हो जाते है। ठहराव।

22. He who loves the Creator of the universe, his malady (of ego), anguish and superstition run away. Pause.

## २३. अंतरि प्रेमु परापति दरसनु ॥
## गुरबाणी सिउ प्रीति सु परसनु ॥ पंना १०३२

23. जिस के अंतर ;प्रभु जी केध्द्र दर्शन की इच्छा हो वह गुरबाणी से प्यार कर ले तो उस को दर्शन हो जाऐंगे।

23. He who has love within to obtain the Lord's vision, if he enshrines affection for the God's Word in his mind he meets with the Lord.

## २४. अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण ॥ पंना ७१४

24. हे नानक, अगर तुझे स्थायी आनंद चाहिए तो तू हमेशा ही सर्व व्यापक स्वामी को प्यार से याद कर।

24. O' Nanak if you desire eternal bliss, ever remember, with affection, the omnipresent Lord.

# 6. जीवन उद्देश्य

मनुष्य जन्म प्रभु को मिलने की बारी है जो आत्मा को अनेक योनियों में से निकलने के उपरान्त मिली है। प्रभु जी को मिलने के लिए साधू की संगति में मिल कर केवल नाम जपना, स्मरण करना, ध्यान लगाना है और प्रभु जी से प्यार कर के उस में लीन होना है। यह लीनता प्रभु की कृपा से होती है। अन्य करम कांड व्यर्थ हैं। पुण्य, दान, तीर्थ स्नान, यज्ञ, जप, तपस्या, संयम, हठ, योग आसन, निओली कर्म, रिधियां, सिधियां, मौन धरण करना, माया की अलग अलग अकलें सीखना, माया इक्ट्ठी कर लेनी, देश जीत लेने या और कर्म प्रभु मिलाप का साध्न नहीं हैं। साधू जीव को और कर्म-कांड में पफसने नहीं देता और नाम भाव बाणी ही दृढ करवाने का कोई लाभ नहीं जब  तक सुन और समझ कर माननम का यत्न ना करें।

# 6. PURPOSE OF HUMAN LIFE

Human life is the chance / turn given to the soul, after going through innumerable incarnations in diffrent species / forms, to merge with the Supreme Lord. The only means through which the soul can merge with God is to recite Naam, remember God with love & affection, to focus ones thoughts on Him, in the company of a blessed soul and to develop extreme love and affection for Him in the mind so that the soul merges with Him. Ultemately, the soul merges with God through His grace only. All other rituals, means or methods such as good actions, giving alms, ablutions at accepted holy places, distributing food items, penance, repeating / reading scriptures without understanding or obeying the instructions, actions to torture the body in different ways, effort to control the functioning of the body organs or different senses, learning or observing different body postures of yoga, postures to control functioning of stomach, obtaning supernatural powers, keeping quiet, learning different sciences, arts and technologies of creation, accumulate wealth, conquering countries or other such actions are not means to merge with God. A blessed soul does not allow the mind to indulge in such practices and ensures that the soul only repeats Naam, recites Naam with love & affection and lives as per the instruction of the God's Word so that the Word percolates in his mind. The soul has to read the God's Word to understand the Word and to live accordingly. It is useless to ask others to read the God's Word unless the induvidual hears and understands the Word and makes sincere effort to live according to the instruction given by the Word.

## सत्यापन के लिए गुरबाणी

१. भई परापति मानुख देहुरीआ ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥ पंना १२

1. तुझे यह मनुष्य शरीर मिला है। यह तेरी सृजनहार को मिलने की बारी है और कर्म तेरे किसी काम नहीं। तूं साधू की संगति में केवल नाम की अराध्ना कर।

1. You have obtained this human body. This is your turn to meet the Creator. Other deeds are of no avail. Joining the company of saints contemplate over the Naam alone.

२. लख चउरासीह भ्रमतिआ दुलभ जनमु पाइओइ ॥ पंना ५०

2. चौरासी लाख योनियों में भटकने के बाद तुझे ना हाथ आने वाला मनुष्य शरीर मिला है।

2. Having wandered through eighty four lakhs of existences you have obtained the sacrcely procurable human life.

३. कई जनम भए कीट पतंगा ॥
कई जनम गज मीन कुरंगा ॥
कई जनम पंखी सरप होइओ ॥
कई जनम हैवर बृख जोइओ ॥ १ ॥
मिलु जगदीस मिलन की बरीआ ॥
चिरंकाल इह देह संजरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंना १७६

3. अनेकों जन्मों में तू कीड़ा और परवाना बना। अनेकों जन्मों में हाथी, मछली और हिरन बना। अनेकों जन्मो में पक्षी और सांप हुआ। कई जन्मों में तू घोड़ा और बैल बन के जोता गया। सृष्टि के स्वामी को मिल। यह जन्म ;मनुष्य काद्ध मिलने की बारी है। बड़ी देर बाद यह मनुष्य शरीर बनाया गया है। ठहराव।

3. For several births you became a worm and a moth. In several births you became an elephant, a fish and a deer. In several births you became a bird and a snake. In several births you were yoked as a horse and ox. Meet the Lord of the universe. This is the time to meet. After a long time this human body has been fashioned. Pause.

४. भजहु गोबिंद भूलि मत जाहु ॥
मानस जनम का एही लाहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंना ११५६

4. सृजनहार स्वामी का नाम जप और उस को ;कभी भीद्ध ना भुला। केवल यह ही इस मनुष्य जीवन का लाभ है। ठहराव।

4. Meditate on the Creator Lord and forget Him not. This alone is the advantage of the human life. Pause.

५. खोजत खोजत सुनी इह सोइ ॥
साधसंगति बिनु तरिओ न कोइ ॥ पंना ३७३

5. ढूंढते और खोजते इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि संतो की संगति के बिना कोई कभी पार नहीं हुआ ;संसार समुंद्र सेद्ध।

5. By searching and seeking I have found that without the society of saints none ever swims across (the ocean of creation).

६. स्रवणी सुणीऐ रसना गाईऐ हिरदै धिआईऐ सोई ॥
करण कारण समरथ सुआमी जा ते बृथा न कोई ॥ पंना ६११

6. साहिब ;की शोभाद्ध को कानों से सुनों, जीभ से गाओ, हुदय में उस को याद करो। दुनिया बनाने वाला सर्वशक्तिमान सब कुछ करने के योग्य है और उस के बिना और ;दूसराद्ध नहीं।

6. Hear with the ears and sing with the tongue (the praiseof the Lord) and in the mind think of Him alone. The Creator of Universe is Omnipotent to do every thing and without Him there is none else.

## ७. धिआइ नानक परमेसरै जिनि दिती जिंदु ॥ पंना ३२१

7. हे नानक, सब से बड़े मालिक का ध्यान कर जिस ने तुझे प्राण दिये हैं।

7. O' Nanak, meditate on the Supreme Lord, who has blessed you with life.

## ८. बिनु सिमरन ध्रिगु करम करास ॥
## काग बतन बिसटा महि वास ॥ पंना २३९

8. स्वामी के भजन के बिना और कर्म हज़ार ध्क्किार के योग्य हैं। कौअे की की चोंच की तरह ;मनमुखद्ध निवास गंदगी में रहता है।

8. Without the Lord's meditation accursed is the doing of other works. Like crow's beak (an apostate's) abode is in ordure.

## ९. बिनु सिमरन कूकर हरकाइआ ॥
## साकत लोभी बंधु न पाइआ ॥ पंना २३९

9. सांई के भजन के बिना जीव पागल कुत्ते की तरह है। लालची मायाधरी कभी तृप्त नहीं होता।

9. Without the Lord's meditation one is like a mad dog. The greedy infidel is never satisfied.

## १० जिनी न पाइओ प्रेम रसु कंत न पाइओ साउ ॥
## सुंञे घर का पाहुणा जिउ आइआ तिउ जाउ ॥ पंना ७९०

10. जो प्यार के स्वाद और अपने पति के आन्नद को प्राप्त नहीं करती वह ;आत्माऐंद्ध खाली घर के मेहमान की तरह हैं, जो जैसे आता है वैसे ही ;बिना कुछ प्राप्त किएद्ध वापिस चला जाता है।

10. Those who obtain not elixir of love and the delight of their Groom, are like the guest of an empty house, who returns as empty handed, as he comes.

## ११. नाम बिना सभि कूड़ु गाली होछीआ ॥ पंना ७६१

11. नाम के बिना और सब वस्तुऐं झूठी और बेकार है।

11. Without Name all other things are false and worthless.

## १२. सेवक की ओड़कि निबही प्रीति ॥
## जीवत साहिबु सेविओ अपना चलते राखिओ चीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंना १०००

12. स्वामी और सेवक का प्रेम अंत तक साथ रहता है। जीते जी सेवक स्वामी के सेवा करता है और अंत समय में हृदय में टिका कर ले जाता है। ठहराव।

12. The love of the Lord's slave endures to the end. In life time he serves the Lord and while departing enshrines Him in his mind. pause.

## १३. निरंकारु अछल अडोलो ॥ जोति सरूपी सभु जगु मउलो ॥
## सो मिलै जिसु आपि मिलाए आपहु कोइ न पावैगा ॥ पंना १०८३

13. स्वरूप के बिना स्वामी ठगा नहीं जा सकता और कभी किसी वस्तु पर डोलता नहीं है। वह प्रकाश रूप ;ज्ञान

13. The Formless Lord is undeceivable and cannot be attractd. He is the Embodiment of

स्वरूपद्ध सब तरपफ प्रपफुल्लित हो रहा है। केवल वह ही उस के साथ मिलता है जिस को वह आप मिलता है। अपने आप कोई भी उस को पा नहीं सकता।

light (knowledge) and flowers in the whole world. He alone meets Him whom He unites. By himself no body can attain Him.

## १४. करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥ पंना २

14. कर्मो के द्वारा शरीर रूपी कपड़ा मिलता है और स्वामी की दया द्वारा मुक्ति का दरवाजा ;मिलता हैद्ध।

14. By actions the physical robe (body) is obtained and by the Lord's benediction and gate of salvation (is obtained).

## १५. नाम बिना फोकट सभि करमा जिउ बाजीगरु भरमि भुलै ॥ पंना १३४३

15. नाम के बगैर सब काम व्यर्थ है ;और यह करनक वाले ऐसे भूले हैंद्ध जैसे कोई मदारी खुद ही अपने ऐकटिंग के रोल को सही समझ ले।

15. Without the Name vain are all other deeds like those of the conjurer, if he himself is deceived by illusion (of his role).

## १६. हिरदै सचु एह करणी सारु ॥ होरु सभु पाखंडु पूज खुआरु ॥ पंना १३४३

16. अपने मन अंदर सच्चे नाम को टिकाओ। केवल यह ही श्रेष्ठ कर्म है और सारे ध्ै और उपासनाऐं बर्बाद करने वाले हैं।

16. Enshrine True Name in your mind. This alone is the sublime deed. Ruinous are all other hypocracies and worships.

## १७. राम नामु जपि गुरमुखि जीअड़े एहु परम ततु वीचारा हे ॥ पंना १०३०

17. गुरू अनुसारी हो कर प्रभु का नाम जप, हे मन, सब वीचारों का यह महान निचोड़ है।

17. Become Guru-ward and recite God's Name O, my soul. Of all deliberations this alone is the supreme quintessence.

## १८. नाम बिना नही छूटसि नानक साची तरु तू तारी ॥ पंना १०१३

18. नाम के बिना जीव की मुक्ति नहीं होती। हे नानक, नाम की सच्ची नाव पर चड़ कर तू पार उतर जा।

18. Without the Name one is released not O, Nanak. So swim across embarking on the Name's true boat.

## १९. सालाहि साचे मंनि सतिगुरु पुन्न दान दइआ मते ॥ पंना ६८८

19. सच्चे गुरू का हुक्म मान कर सदीवी प्रभु की कीर्ति कर। यही पुन्य और दान देना और दयावान स्वभाव है।

19. Obey the True Guru and praise the True Lord. This is giving of alms and charity and compassionate nature.

२०. सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ॥
चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिव तार ॥
भुखिआ भुख न उतरी जे बन्ना पुरीआ भार ॥
सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥
किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥ पंना १

20. स्नान करने से ;चाहे पवित्रा तीरथों पर किये जाएद्ध मन पवित्रा नहीं होता चाहे लाखों बार स्नान करें। लगातार चुप रहने से मन शांत नहीं होता। मन की इच्छा खत्म नहीं होती चाहे संसारिक पदार्थो के ढेर, भुखे मन को दे दें। मन हजारों और लाखो अकलें प्राप्त कर ले और अलग अलग विषयों का ज्ञान प्राप्त कर ले तो यह ;प्रभु दरगाह मेंद्ध एक भी काम नहीं आती। मन किस तरह निर्मल हो सकता है और झूठ ;माया के मोहद्ध की दीवार किस तरह टूट सकती है ? हे नानक, हुक्मी के हुक्म में चलने से जो हुक्म मन के साथ लिख हुआ है।

20. By washing the body (even at holy places of pilgrimage) the mind is not purified even if one washes the body lakhs of time. Even if one remains silent constatly, he obtains not mind's silence. The desire of the hungry mind departs not though it may obtain loads of valuables of the worlds. Man may posess thousands and lakhs of wits or knowledge of different subjects it is not useful (in the Lord's court). How can be mind be purified and how can the screen (wall) of untruth (attachment to creation) be demolished. By obeying O' Nanak the command of the Lord of will, which is ingrained in the soul.

२१. सभि जप सभि तप सभ चतुराई ॥
ऊझड़ि भरमै राहि न पाई ॥
बिनु बूझे को थाइ न पाई ॥
नाम बिहूणै माथे छाई ॥ पंना ४१२

21. सब पूजा, सब तपस्याऐं और ;माया केद्ध सुनसान जंगल में भटकता है और उसको रास्ता नहीं मिलता। हुक्म भाव गुरबाणी मानने के बिना कोई भी स्वीकार नहीं होता। नाम के बिना आदमी के सिर पर राख पड़ती है।

21. Inspite of all worships, all penance, all cleaverness, man wanders in wilderness and finds not the way. Without obeying the order i.e. the Guru's Word none is approved. Without Naam one has ashes thrown on his head.

२२. जपु तपु करि करि संजम थाकी हठि निग्रहि नही पाईऐ ॥ पंना ४३६

22. मन पूजा, तपस्या और स्वः संयम करके थक टूट जाता है। हठीले

22. Mind grows weary of practising worships, penance and

कर्म-कांड़ो ;शरीरक तंगीद्ध द्वारा प्रभु प्राप्त नहीं होता।

self discipline. God is not obtained through persistent self torture.

**२३. हठु निग्रहु करि काइआ छीजै ॥**
**वरतु तपनु करि मनु नही भीजै ॥ पंना ९०५**

23. हठीले शरीरक कठिन कर्म-कांड़ द्वारा शरीर सूख सड़ जाता है ;सेहत खराब हो जाती हैद्ध। व्रत और तपस्या द्वारा आत्मा ;प्रभु प्रेम वालीद्ध नहीं होती।

23. By practising stubborn / persistent self torture the body wears off. Through fasting and penance the soul is softened not.

**२४. पाठु पड़िओ अरु बेदु बीचारिओ निवलि भुअंगम साधे ॥**
**पंच जना सिउ संगु न छुटकिओ अधिक अहंबुधि बाधे ॥ पंना ६४१**

24. आदमी धर्मिक पुस्तके पड़ता है, उन में लिखे ज्ञान और सिधंतो की विचार करता है, अंतर धेने और सांस रोकने का अभ्यास करता है। इस तरह पांच बुरे विषय-विकारों से मुक्ति नहीं पाता और अहंकारी बुि( से बल्कि और बंध जाता है।

24. The man reads the holy texts and understands the knowledge & throries wirtten in those texts. He practises inner washing and breath control. But he escapses not from the clutches of the five evil passions and is all the more tied to haughty disposition.

**२५. पड़िऐ मैलु न उतरै पूछहु गिआनीआ जाइ ॥ पंना ३६**

25. ;ध्र्म ग्रंथद्ध पड़ने से ;अहंकार कीद्ध गंदगी दूर नहीं होती। ब्रहमवुताओं से पता करो ;इस सच्चाई के बारे मेंद्ध।

25. The Filth (of ego) is not washed by reading (scriputures). Cosult the divine (to understand this truth).

**२६. बुधि पाठि न पाईऐ बहु चतुराईऐ भाइ मिलै मनि भाणे ॥ पंना ४३६**

26. अक्ल, पूजा-पाठ और बहुत चालाकी द्वारा ;प्रभुद्ध प्राप्त नहीं होता। प्यार सहित उस का हुक्म मानने से प्रभु प्राप्त होता है।

26. Through intellect,reading of holy texts and great clevernesses (the Lord) is not obtained. God is obtained by obeying His instruction with love & affection.

**२७. लख नेकीआ चंगिआईआ लख पुन्ना परवाणु ॥**
**लख तप उपरि तीरथाँ सहज जोग बेबाण ॥**
**लख सूरतण संगराम रण महि छुटहि पराण ॥**
**लख सुरती लख गिआन धिआन पड़ीअहि पाठ पुराण ॥**
**जिनि करतै करणा कीआ लिखिआ आवण जाणु ॥**
**नानक मती मिथिआ करमु सचा नीसाणु ॥ पंना ४६७**

27. लाखों नेक और शुभ कर्म, लाखो प्रामाणिक दान, ध्र्म स्थानों पर लाखों तपस्याऐं, प्रभु मिलाप के लिए

27. Lacs of virtues and good actions, lacs of approved charities, lacs of penances at holy

समाध्यिां जंगलों में रह कर लगानी,
लाखों बहादुरियां यु( के मैदान मे
करनी और लड़ते हुए शहीद हो जाना,
लाखों ब्रहमज्ञान की बाते सीखनी और
ध्यान जोड़ना, पुराणों के पाठ करने,
यह कर्म झूठे हैं और सच्चा है रहमत
;कृपाद्ध का चिन्ह, उस मालिक का
जिस ने रचना रची है और जीवों का
आना जाना बनाया है, हे नानक।

places and practices of union
(with the Lord) while living in
wilderness, lacs of valours and
giving one's life in battle field,
lacs of divine comprehensions &
concentrations, reading of
Puranas, these acts of wisdom are
false and true is the mark of His
grace,who has created the
creation and ordained the coming
and going of the soul O' Nanak

## २८. सगल सृसटि को राजा दुखीआ ॥
## हरि का नामु जपत होइ सुखीआ ॥ पंना २६४

28. ;चाहे कोईद्ध सारे संसार का
बादशाह बन जाये पिफर भी ;वहद्ध
दुखी रहता है। जो प्रभु का नाम
जपता है वह सुखी हो जाता है।

28. (Even if one becomes) The
king of the whole world (he)
remains miserable. He who repeats
God's Name become happy.

## २६. सबदि मरै मनु निरमलु संतहु एह पूजा थाइ पाई ॥ पंना ६१०

29. अगर मन बाणी में पूर्ण रूप से
औद सदैव लीन हो जाए तो पवित्रा हो
जाता है। ऐसी उपासना प्रभु स्वीकार
करता है, हे संतों।

29. If the soul remains completely
& continuosuly absorbed in the
Word (of God), the soul becomes
inmaculate. Such a worship is
acceptable (to the Lord), O' Saints.

## ३०. सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥
## हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥ पंना २६६

30. सब ध्र्मो में से उत्तम ध्र्म प्रभु
जी का नाम जपना है। यह कर्म माया
से जीव को अलिप्त रखता है।

30. Of all religions the best religion
is to repeat God's Name. This
deed is unattached action i.e. it
does not attach the soul to mammon.

## ३१. मन्ने नाउ सोई जिणि जाइ ॥
## अउरी करम न लेखै लाइ ॥ पंना ६५४

31. जो नाम ;शब्दद्ध अनुसार कर्म
करता है वह जीत जाता है और कर्मो
से नहीं जीत सकता।

31. He who acts according to the
Name (the Word) becomes
victorious. Other deeds are useless
(so far as conquering ego is concerned).

# 7. हुक्म-उपमा और प्रार्थना

प्रभु का हुक्म उपमा करना भाव प्रभु के गुण गाने और विचारने का है। प्रभु जी गुणों का भंडार है। उस के गुण विचार के ही उस का स्मरण किया जा सकता है। अहंकार की केवल एक दवाई प्रभु के गुण गाने, उस के आगे प्रार्थना करनी और गुरबाणी में अंकित हुक्म को मानना है। यही सेवा है। गुरू शब्द प्रभु कृपा द्वारा ही माना जा सकता है।

# 7. ORDER - PRAISE AND PRAYER

The God's order is to sing His praises and to focus on His virtues. God is a treasure trove of virtues and can only be remembered by contemplating His virtues. The only medicine of ego is to sing His praises, to pray to Him and to obey His instruction as mentioned in the God's word. This is His real service. The God's word can only be obeyed by His grace.

## सत्यापन के लिए गुरबाणी

१. सिफति सालाहणु तेरा हुकमु रजाई ॥ पंना १००

1. हे हुक्म देने वाले मालिक, तूने ;जीवों कोद्ध उपमा और शोभा करने का हुक्म दिया है।

1. O' Lord of will, You have ordered the souls to sing Your praises.

२. सिफति सलाहणु सहज अन्नद ॥ पंना ३५२

2. स्वामी की शोभा और उपमा करने में ईश्वरीय खुशी है।

2. In the Lord's praise and admiration is divine bliss.

३. गुन गावत तेरी उतरसि मैलु ॥
बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु ॥ पंना २८६

3. ;प्रभु कीद्ध उपाम गायन करने से तेरी मैल ;गंदगीद्ध धूल जाएगी और सारे पफैला हुआ अहंकार ज़हर दूर हो जाएगा।

3. By chanting (God's) glories the filth shall be washed off and the all spreading poison of ego shall depart.

४. तूं सचा साहिबु सिफति सुआलिउ जिनि कीती सो पारि पइआ ॥ पंना ४६६

4. तू सदैव मालिक है। सुंदर है तेरी कीर्ति। जो गुण ;तेरेद्ध गाता है वह पार उतर जाता है।

4. You are the Eternal Lord and beautiful is Your praise. He who hyms it swims across.

५. जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥
नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥
गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥ पंना २

5. जिन्होने उस ;प्रभु जीद्ध की सेवा की उनको इज्जत मिली। हे नानक, उस की शोभा गायन कर जो गुणों का भंडार है। प्रभु के लिए प्रेम भाव मन में रख कर उस को शोभा गायन कर और सुन। इस तरह तेरी तकलीपफ दूर हो जाएगी और खुशी प्राप्त होगी।

5. They who serve Him obtain honour. O' Nanak sing the praises of the Lord who is treasure of excellences. With the Lord's love reposed in your mind sing and hear His praises. Your pain would be destroyed and you shall obtain happiness.

## ६. नानक हुकमु न चलई नालि खसम चलै अरदासि ॥ पंना ४७४

6. हे नानक, स्वामी के साथ हुक्म नहीं चलता। केवल प्रार्थना ही काम आती है।

6. O' Nanak command succeeds not with the Lord, it is only the imploration which works.

## ७. मन ते धोखा ता लहै जा सिफति करी अरदासि ॥ पंना ५५७

7. केवल तब ही मन में से संदेह ;द्वेष भावद्ध दूर होता है अगर जीव प्रभु जी के गुण गाए और उस के आगे प्रार्थना करे।

7. Then alone the doubt (duality) departs from the mind if one sings His praises and prays to Him.

## ८. गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरू निसतारे ॥ पंना ९८२

8. अगर संवक गुरबाणी को माने तो प्रभु अवश्य ही उस को तार देता है।

8. If the attendent acts according to the God's Word, God surely saves him.

## ९. नानक हरि का भाणा मन्ने सो भगतु होइ विणु मन्ने कचु निकचु ॥ पंना ९५०

9. हे नानक, जो प्रभु का हुक्म मानता है वह ही उस का श्र(ालु है। ;हुक्मद्ध माने बिना इन्सान झूठों में से परम झूठा है।

9. O' Nanak,he who accepts the God's will is His devottee. Without obeying (His order) One is falsest of the false.

## १०. हुकमि मंनिऐ होवै परवाणु ता खसमै का महलु पाइसी ॥
## खसमै भावै सो करे मनहु चिंदिआ सो फलु पाइसी ॥
## ता दरगह पैधा जाइसी ॥ पंना ४७१

10. प्रभु की आज्ञा मानने से जीव स्वीकार होता है और मालिक के घर पहुँचता है उस की मन की इच्छाऐ पूरी होती है और वह सम्मान सहित प्रभु दरगाह में जाता है।

10. By obeying His command man becomes acceptable and enters the Master's mansion. He who does that what pleases his Master, obtains his hearts desires. He then enters God's court wearing the robe of honour.

## ११. तेरा भाणा तूहै मनाइहि जिस नो होहि दइआला ॥ पंना ७४७

11. हे साई, अपना हुक्म तू केवल उस से मनवाता ळै जिस पर तू दया करता है।

11. O' Lord, him alone You help obey Your order, to whom You are merciful.

# 8. नाम रस

हुक्म के कई अंग है और हुक्म बहुत सख्त है। अपने यत्न और मन हठ से यह माना नहीं जा सकता। साधू की संगति में प्रभु के गुण गाने और प्रार्थनाए करने से मन निर्मल होता है, प्रभु की कृपा होती है। जैसे जैसे गुरमुखि की संगति में नाम जपने से मन निर्मल होता है, मन की हुक्म मानने की शक्ति बड़ती जाती है। पूरा निर्मल मन ही हुक्म को पूरी तरह से मान सकता है। जब मन पूरा निर्मल हो जाता है तो जीव को नाम रस आता है जो सम रसों से उत्तम है। नाम रस प्राप्त होने से मन तृप्त हो जाता है, माया का खिचाव हट जाता है और माया के रसों-काम, क्रोध आदि को जीव त्याग देता है। नाम रस की प्राप्ती चतुराई, समझदारी, हठ, ध्न भेंट करने से नहीं होती। कवल नाम सिमरन और गुरबाणी को मानने से, प्रभु कृपा द्वारा होती है। यह सहज मार्ग है।

# 8. ELIXIR OF NAAM

The order of God-as mentioned in the God's Word-has manyaspects and it is almost impossible to obey the instruction with individual effort. By singing praises / virtues of the Lord and by praying to the Lord, in the company of the blessed soul, the mind starts getting cleansed of ego and receives God's grace. By undergoing this process, as the mind is cleansed of ego, its ability to obey instruction of the God's Word increases. Only a purified mind can fully obey the instruction of the God's Word. When the mind is totallypurified of ego it obtains the elixir of Naam which is tastier than all tastes of creation. The mind obtains contentment when it enjoys the elixir of Naam and it is freed from all tastes of lust, wrath, greed, attachement, pride etc, : and leaves all these without much effort. The exilir of Naam cannot be obtained by cleverness, intelligence, tough body postures, self effort, offering money, etc., etc. The elixir of Naam can only be obtained by reciting the God's Word with love and affection, by obeying the instruction conveyed by the God's Word and by the grace of God. This is the way of effortless effort and total submission.

## सत्यापन के लिए गुरबाणी

### १. हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥ पंना १

1. सांई के हुक्म द्वारा आकार ;शरीरद्ध बनते हैं। उस का हुक्म ;पूराद्ध वर्णन नहीं किया जा सकता।

1. By the Lord's order forms are created. His order cannot be narrated.

### २. तेरा भाणा तूहै मनाइहि जिस नो होहि दइआला ॥ पंना ७४७

2. हे सांई, अपना हुक्म तू केवल उस से मनवाता है जिस पर तू दया करता है।

2. O' Lord him alone you help obey Your order to whom You are merciful.

### ३. इहु सागरु सोई तरै जो हरि गुण गाए ॥ साधसंगति कै संगि वसै वडभागी पाए ॥ पंना ८१३

3. केवल वह ही इस ;संसारद्ध समुंद्र से पार होता है जो प्रभु के गुण गाता है। वह अति उत्तम भाग्य के कारण संत संगति में रहता है।

3. He alone crosses this (world) ocean who sings the Lord's praises. He abides with the saint's society, which he obtains due to good fortune.

४. बिनु उपमा जगदीस की बिनसै न अंधिआरा ॥ पंना २२८

4. सृष्टी के स्वामी की उपमा किए
बिना अंधेरा ;अहंकार काद्ध दूर नहीं होता।

4. Without the praise of the world
Lord, the darkness (of ego) is not dispelled.

५. मन ते धोखा ता लहै जा सिफति करी अरदासि ॥ पंना ५५७

5. केवल तब ही मन में से संदेह
;द्वैष भावद्ध दूर होता है अगर जीव
प्रभु जी के गुण गाए और उस के
आगे प्रार्थना करे।

5. Then alone the doubt (duality)
departs from the mind if one sings
His praises and prays to Him.

६. तिस नो सदा दइआलु जिनि गुर ते मति लई ॥ पंना ६६१

6. तू ;हे ईश्वरद्ध उस पर सदा दया
करता है जो गुरू से शिक्षा लेता है
और उस शिक्षा को मानता है।

6. You (O' God) are ever
compasionate to him, who
receives instruction from the Guru
and obeys the instruction.

७. हउमै जाई ता कंत समाई ॥
तउ कामणि पिआरे नव निधि पाई ॥ पंना ७५०

7. अगर जीव का अहंकार मिट जाए
तो जीव आत्मा नौं भंडारों के मालिक
प्यारे ;प्रभु-पतिद्ध में समा जाती है।

7. If the soul efaces the ego then
she obtains the beloved Lord of
nine treasures and merges with her Spouse.

८. हरि रसु के माते मनि सदा अन्नद ॥
आन रसा महि विआपै चिंद ॥ १ ॥
हरि रसु पीवै अलमसतु मतवारा ॥
आन रसा सभि होछे रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥
हरि रस की कीमति कही न जाइ ॥
हरि रसु साधू हाटि समाइ ॥
लाख करोरी मिलै न केह ॥

जसहि परापति तिस ही देहि ॥ पंना ३७७

8. नाम रस से मतवाला हो कर हमेशा खुश रहता है। अन्स रसों में चिता रहती है। जो नाम रस पीता है वह पूरन रूप से डूब जाता है, नशे में। अन्य रस ऐसे तुच्छ जैसे है, हे इन्सान। ठहराव। नाम अमृत का मूल्य नहीं बताया जा सकता। नाम रस संत की दुकान पर होता है ;भाव संत के पास होता हैद्ध। लाखों और करोड़ों ;रूपयेद्ध से यह रस नहीं मिलता। जिस के भाग्य में रस प्राप्ती हो उस का संत देता है।

8. Intoxicated with the Lord's essence, one remains ever happy. In other revelments anxiety befalls. He who drinks God's nectar is inebreated and intoxicated. All other pleaures are paltry O'man. Pause. The value of the Lord's ambrosia cannot be told. The Lord's ambrosia is contained in the saint's shop. With millions and billions (of money) it cannot be obtained. He who is destined to obtain it, him the saint gives.

९. हरि रसु जन चाखहु जे भाई ॥
तउ कत अनत सादि लोभाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंना ७३३

9. हे भाई, अगर तू नाम रस चख ले तो तू और स्वादों में कैसे प्रलोभित हो सकता है। ठहराव।

9. O' brother if you taste God's ambrosia, then how can you be enamoured of other relishes. Pause.

१०. हरि रसु जिनि जनि चाखिआ ॥
ता की तृसना लाथीआ ॥ २ ॥ पंना २११

10. जिस ने भी नाम रस चखा है उस की इच्छा ही मिट जाती है ;माया कीद्ध।

10. The person who tastes God's exlixir, his desire is slaked.

११. जिन चाखिआ से जन तृपताने ॥
पूरन पुरख नही डोलाने ॥
सुभर भरे प्रेम रस रंगि ॥
उपजै चाउ साध कै संगि ॥ पंना २८६

11. जो इस ;नाम करद्ध का मामूली स्वाद चखते हैं वही तृपत हो जाते है और ;माया परद्ध प्रलोभित नहीं होते। वह प्रभु की प्रीति की मिठास और खुशी में पूरन लीन रहते हैं। ;ऐसेद्ध संतों की संगति में जीव को ;नाम रसद्ध प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न होती है।

11. The mortals who just taste it (God's elixir) are satiated. They become perfect persons and waiver not. they are completely filled with the sweetness and delight of the Lord's love. In the society of (such) saints one is induced to obtain (God's elixir).

१२. सतिगुर वचनु रतन्नु है जो मन्ने सु हरि रसु खाइ ॥ पंना ४१

12. सच्चे गुरू की बाणी रत्न है। जो बाणी का माने उस को हरी रस खाने के लिए मिलता है।

12. The Word of True Guru is the emerald, who obeys it he tastes God's elixir.

## १३. चतुराई न चतुरभुजु पाईऐ ॥ पंना ३२४

13. चालाकी या समझदारीयों से चार भुजाओं काला ;मालिकद्ध नहीं मिलता।

13. Through cleverness the four armed (God) is not obtained.

## १४. प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु ॥
## प्रभू दइआ ते कमल बिगासु ॥ पंना २७१

13. चालाकी या समझदारीयों से चार भुजाओं काला ;मालिकद्ध नहीं मिलता।

13. Through cleverness the four armed (God) is not obtained.

## १५. भगति भंडार गुरबाणी लाल ॥
## गावत सुनत कमावत निहाल ॥ पंना ३७६

15. गुरबाणी स्वामी की प्यार भरी याद के जवाहरात का खजाना है। इस को गाने, सुनने और इस पर अमल करने से इन्सान निहाल हो जाता है।

15. The God's Word is the treasure of jewels of the Lord's meditation. By singing, hearing and acting accordingly one is satiated.

## १६. दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि ॥
## इकि जागंदे ना लहनि् इकना सुतिआ देइ उठालि ॥ पंना १३८४

16. सब रहमतें प्रभु की है पर उस को यह देने के लिए कौन मजबूर कर सकता है। कई जगाते हुए ;मुख-ज्ञानीद्ध भी उनको प्राप्त नही करत और कई सोऐ हुओं ;अज्ञानीयोंद्ध को वह आप जगा कर दान दे देता है।

16. All bounties are of the Lord, but who can force Him to grant those. Some who are awake (knowledgeable persons) receive them not, while some He Himself wakes up from sleep (of ignorance) and blesses them with gifts.

q q q

# 9. साध संगति

गुरमुखि की लगातारी संगति में नाम दृढ़ होता है। संत का सत्कार और प्रभु का प्यार मन में बड़ता ही जाता है। संगति में रहने के लिए साधू का सत्कार जरूरी है और बड़ा पुन्य कर्म है। सेवा केवल ईश्वर और संत की करनी है। राम मुक्ती दाता है और संत उस का नाम जपवाता है। संत की पूरी सेवा नाम का ध्यान करना ही है। प्रभु और संत को खुश करने का केवल एक ही ढ़ग प्रभु जी के गुण गाना है। यह सेवा है।

# 9. COMPANY OF A BLESSED SOUL

In the continuous company of a blessed soul Naam gets ingrained in the mind. Respect for the saint and love for God goes on increasing,. To live in the company of the saint it is essential to have deep respect for him in the mind and this is a very good action. One should serve only God and His sanit. God saves the soul from the clutches of ego & emancipates it and the saint helps in reciting Naam. Real service of a saint is to focus attention on God. The only way to please God and the blessed soul (True Guru) is to sing the praise of God. This is true service.

## सत्यापन के लिए गुरबाणी

१. संता की होइ दासरी एहु अचारा सिखु री ॥
सगल गुणा गुण ऊतमो भरता दूरि न पिखु री ॥ पंना ४००

1. संतो की नौकरानी बन जा, तू यह करना सीख। सब गुणों में से श्रेष्ठ गुण यह है कि कंत ;प्रभुपतिद्ध को दूर ना देख।

1. Become the handmaiden of the saints, learn this conduct. The sublimest virtue of all the virtues is not to see the Spouse afar.

२. जो जो सरणि परै साधू की सो पारगरामी कीआ ॥ रहाउ ॥ पंना ६१०

2. जो भी संतों की पनाह लेता है उस को पार कर दिया जाता है ;संसार समुंद्र सेद्ध। ठहराव ।

2. Who-so-ever seeks the saints shelter, he is ferried across (the world ocean). Pause.

३. कबीर संगति साध की दिन दिन दूना हेतु ॥ पंना १३६६

3. कबीर संत की संगति में रहने से प्रभु की प्रीति दिन-प्रतिदिन दुगनी होती जाती है।

3. Kabir associatiing with the saint, the Lord's love doubles day by day.

४. करि साधू अंजुली पुन्नु वडा हे ॥
करि डंडउत पुनु वडा हे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंना १७१

4. संत को हाथ जोड़ कर नमस्कार कर। यह बड़ा नेक कर्म है। लेट कर प्रणाम कर। यह विशाल नेकी है। ठहराव।

4. Make obeisance with folded hands unto the saint. it is a great meritorous act. Make a prostate salutation. This is a great meritorious act. pause.

५. मेरे मन साध सरणि छुटकारा ॥
बिनु गुर पूरे जनम मरणु न रहई
फिरि आवत बारो बारा ॥ रहाउ ॥ पंना ६११

5. हे मेरे मन, संत की शरण में जाने से मुक्ति प्राप्त होती है। पूरे गुरू के बगैर जन्म मरण खत्म नहीं होता। प्राणी बार बार आता रहता है। ठहराव।

5. O'my mind, emancipation is obtained by seeking the saint's refuge. Without the perfect Guru births and deaths end not, rather mortal comes over and over again.Pause.

६. कबीर सेवा कउ दुइ भले एकु संतु इकु रामु ॥
रामु जु दाता मुकति को संतु जपावै नामु ॥ पंना १३७३

6. कबीर, सेवा करने के लिए केवल दो हस्तीआं ही श्रेष्ठ हैं। एक साधू और दूसरा प्रभु। प्रभु मुक्ति देता है और संत उस का नाम जपवाता है।

6. Kabir, for serving, only two personalities are sublime, one the saint and anoher the Lord. The Lord is the Giver of salvation and saint helps man utter the Name.

७. संत की सेवा नामु धिआईऐ ॥ पंना २६५

7. नाम में ध्यान जोड़े, यह संत की ;असलीद्ध सेवा है।

7. Meditate on the Naam,this is saint's (real) service.

८. हरि गुण गाए गुर नानक तूठे ॥ पंना १३४१

8. प्रभु जी के गुण गाने से गुरू नानक की प्रसन्नता ;कृपाद्ध प्राप्त होती है।

8. By singing the praise of the Lord one obtains the mercy of Guru Nanak.

९. हरि जसु वखरु लै चलहु सहु देखै पतीआइ ॥ पंना २२

9. प्रभु के यश उपमा का सौदा साथ लेकर जाओ। मालिक इस को देख कर पतीज जाऐगा। ठहराव।

9. Take along and depart with God's praises, the Spouse shall view and be satisfied. Pause.

q q q

# *10. नाम अभियास की विधी*

मन में प्रभु जी के लिए प्यार की भावना रख कर शब्द के अर्थ में ध्यान को जोड़ कर, गुरबाणी द्वारा प्रभु जी के गुण गाने और विचारने हैं। इस तरह गुरबाणी की पारस कला अपना प्रभाव दिखाती है और मन पर शब्द का असर होता है। यह विधी अपनाए बिना मन पर असर नहीं होता। तोते जैसे रटने से कोई लाभ नहीं होता। गुण गाने के लिए सब से उत्तम अक्षर वाह वाह कहना है प्रभु जी को। वाह का अर्थ है आश्चर्यजनक, विसमाद, बल्ले-बल्ले, हैरान करने वाला, सुभान, वंडरपफुल ;Wonderfulद्ध गुरबाणी प्रभे जी के गुण बताती है और मन हैरान होता है और वाह वाह प्रभु जी को कहने लगता है।

## 10. HOW TO RECITE GOD'S NAME

One should sing the praises of the Lord through the God's Word, with all the love and affection for God, with rapt attention and full understanding of the Word being sung. Only in this manner the mind imbibes the import of the God's Word and mind starts getting purified. Just repeating the God's Word without observing the above process is useless. The best word to praise God is to say "Wonderful" to God. The God's Word enumerates the virtues of God and the mind, absorbing the import of the Word says God is wonderful.

## *सत्यापन के लिए गुरबाणी*

१. गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥ पंना २

1. प्रभु के लिए मन में प्यार की भावना रख कर उस की उपमा गाओ और श्रवण करो। इस तरह तरलीपफ दूर हो जायेगी और खुशी हृदय में उमड़ आयेगी।

1. With the Lord's love reopsed in the heart, sing and hear His praises. The misery (pain) shall be destroyed and happiness shall well-up in the mind.

२. सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे ॥ पंना ९३८

2. ;गुरू कीद्ध बाणी में ध्यान जोड़ के नाम जपने से, हे नानक, डरावना समुंद्र ;दुनिया काद्ध पार किया जाता है।

2. By fixing attention on the (Guru's) Word and uttering the Name O' Nanak, the deradful ocean (of creation) is crossed.

३. प्रभ की उसतति करहु संत मीत ॥
सावधान एकागर चीत ॥ पंना २९५

3. चैतन्य और एक चित्त होकर, हे मित्रा संतो, प्रभु की उपमा करो।

3. Sing the praise of the Lord,O' friendly saints, with alertness and single mindedness (with rapt attention).

४. बिनु जिहवा जो जपै हिआइ ॥
कोई जाणै कैसा नाउ ॥ पंना १२५६

4. कोई विरला ही जानता है कि ;प्रभु काद्ध नाम कैसा है, जब वह चित्त में बिना बोले प्रभु को याद करता है।

4. Some rare one knows what sort the Name is, when he remembers the Name in his mind, wihtout using his tongue.

**५. हरि की भगति करहु मनु लाइ ॥**
**मनि बंछत नानक फल पाइ ॥ पंना २८८**

5. तू मन लगा कर ईश्वर को प्यार सहित याद कर। इस तरह तू मन की मुरादें प्राप्त कर लेगा, हे नानक।

5. Heartly apply yourself to God's devotional meditation, Thus you shall obtain your heart's desires, O' Nanak.

**६. गोबिंद गोबिंद करि हाँ ॥**
**हरि हरि मनि पिआरि हाँ ॥**
**गुरि कहिआ सु चिति धरि हाँ ॥**
**अन सिउ तोरि फेरि हाँ ॥**
**ऐसे लालनु पाइओ री सखी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंना ४०६**

6. मै सृजनहार का नाम जपता हूँ और मन में उस को प्यार करता हूँ। मैं गुरू के हुक्म को मन में बसाता हूँ भाव गुरू के शब्द के अनुसार कर्म करता हूँ। अन्य के मोह और अन्य चीजों के मोह को घटाता हूँ। इस तरह मैंने प्यारे ;प्रभुद्ध को प्राप्त किया है, हे सहेली। ठहराव।

6. I repeat the Name of the world Creator and love Him in my mind. What the Guru says, I place that in my mind i.e. obey the Guru's Word. I withdraw my self from attachement to others & other wordly things. In this manner I have obtained my beloved (Lord) O'my friend . Pause.

**७. नानक सचु कहै बेन्नती सचु मिलै गुण गावणिआ ॥ पंना १०६**

7. नानक सही बेनती करता है कि सच्चा मालिक उस का यश गाने से मिलता है।

7. Nanak makes a true supplication. The True Lord is obtained by chanting His glories.

**८. रवनी रवै बंधन नही तूटहि विचि हउमै भरमु न जाई ॥ पंना ३५३**

8. केवल जीभ से ;प्रभू नामद्ध उच्चारण करने से ;माया केद्ध बंध्न नहीं टुटते और अंदर से अहंकार और संदेह दूर नहीं होते।

8. By mere utterance with the tounge (of God's Name) the bonds (of creation) are not broken, and ego and doubt depart not from within.

**९. कथनै कहणि न छुटीऐ ना पड़ि पुसतक भार ॥**
**काइआ सोच न पाईऐ बिनु हरि भगति पिआर ॥ पंना ५६**

9. केवल ;नामद्ध कहने और उस की बातें करने से या ढेरों के ढेर पुस्तकें पड़ने से जीव की मुक्ति नहीं होती है। प्रभु से प्यार कर के प्रेम सेवा किये बिना शरीर के स्नान भी ऐसे ही हैं।

9. By mere talking (about) and saying (God's Name) or reading loads of books one is not saved. Without God's devotional service and affection, washing of the body is also useless.

१०. मुखहु हरि हरि सभु को करै विरलै हिरदै वसाइआ ॥
नानक जिन कै हिरदै वसिआ मोख मुकति तिन् पाइआ ॥ पंना ५६५

10. मुख से हर कोई प्रभु के नाम का उच्चारण करता है। बहुत ही कम नाम को मन में टिकाते हैं। हे नानक, जिन के अंदर प्रभु बसता है केवल वह ही मोक्ष और कल्याण को प्राप्त करते हैं।

10. From the mouth every one repeats God's Name, but only a few enshrine it in the mind. O' Nanak, within whose heart dwells the Lord they alone obtain deliverence and emancipation.

११. हरि हरि नित करहि रसना कहिआ कछू न जाणी ॥
चितु जिन का हिरि लइआ माइआ बोलनि पए रवाणी ॥ पंना ६२०

11. जो जीभ से नाम जपते है, पर जो कह रहे है उस को थोडा सा भी नहीं समझते और मानते, उन का मन माया ने मोह लिया है वह ऐसे बिना सोचे समझे तेजी से बोलते जाते है ;और रचना के मोह में से नहीं निकलतेद्ध।

11. Those who utter God's name with the tongue but realise not in the least, what they say, whose mind is lured by mammon they only continue reciting fluently and mechanically (but ever remain attached to creation).

१२. वाहु वाहु सिफति सलाह है गुरमुखि बूझै कोइ ॥ पंना ५१४

12. आश्चर्यजनक, आश्चर्यजनक ;कहनाद्ध प्रभु जी की शोभा ;करनाद्ध है। कोई विरला ही, गुरू द्वारा यह बात जानता है।

12. (To utter) wonderful, wonderful is God's praise and some rare one understands this through the Guru.

१३. वाहु वाहु करतिआ मनु निरमलु होवै हउमै विचहु जाइ ॥ पंना ५१५

13. ;प्रभु जी कोद्ध आश्चर्यजनक, आश्चर्यजनक कहने से मन पवित्रा हो जाता है और अहंकार अंदर से दूर हो जाता है।

13. By uttering wonderful, wonderful (to God) the mind is purified and ego departs from within.

१४. वाहु वाहु गुरसिख नित सभ करहु गुर पूरे वाहु वाहु भावै ॥ पंना ५१५

14. सारे गुरसिख सदा ;प्रभु जी कोद्ध आश्चर्यजनक, आश्चर्यजनक कहें। पूरा गुरू ;प्रभु जी कोद्ध आश्चर्यजनक, आश्चर्यजनक कहने वाले सिख पर प्रसन्न होता है।

14. All sikhs of the Guru should utter wonderful, wonderful (to God). The perfect Guru is pleased when his disciple says (God is) wonderful.

१५. वाहु वाहु करि प्रभु सालाहीऐ तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ पंना १२७६

15. शबाश, शाबाश ;हैरान करने वाला, आश्चर्यजनक, बल्लेद्ध कह हे तू मालिक की शोभा कर। उस जितना बड़ा और कोई नहीं है।

15. Uttering Bravo, Bravo (wonderful, wonderful) you praise the Lord. None else is as great as He.

१६. नानक वाहु वाहु करतिआ प्रभु पाइआ करमि परापति होइ ॥ पंना ५१४

16. हे नानक, ;प्रभु कोब्द्ध वाह वाह कहने से मैनें पभु को प्राप्त किया है। आश्चर्यजनक, आश्चर्यजनक कहने से ;प्रभु कीब्द्ध कृपा प्राप्त होती है।

16. O' Nanak, by saying wonderful, wonderful (to God) I have attained the Lord. By uttering wonderful His grace is obtained.

q q q

# 11. जन्म व्यर्थ

प्रभु के गुण गाए बगैर जन्म व्यर्थ जाता है। गुण प्रभु की कृपा से ही गाए जा सकते हैं। गुण गाने का यत्न करना है, प्रभु के आगे प्रार्थना करनी है कि गुण गाने की तरपफ लगा दे। प्रार्थना भी गुरबाणी के साथ जुड़ कर करनी है। अपनी मर्जी से प्रार्थना करने पर मन माया की वस्तुऐं मागने लग जाता है। यह मांगे दुख तकलीपफें पैदा करती हैं। प्रभु से उस के दर्शन, चरणों में निवास, यश करना भाव गुण गाने और गुरमुखि की संगति मांगना भला है।

# 11. USELESS HUMAN LIFE

The human life goes waste without singing the praises of God. One can sing the praises of the Lod only by His grace. So the individual shoul try to sing His praise and pray to God to shower His grace on the mind so that the mind may be able to sing His praises. The prayer should also be done through the God's Wod. If one tries to pray without the help of the God's Word the mind goes astray and starts seeking objects of creation from God. Such demands create misery for the soul. It is good to seek His realisation, merger in His lotus feet, His praises and company of a blessed soul from God.

## सत्यापन के लिए गुरबाणी

१. गुन गोबिंद गाइओ नही जनमु अकारथ कीनु ॥ पंना १४२६

1. सृजनहर प्रभु के गुण गाए बगैर जन्म बेकार जाता है।

1. Without singing the praises of the world Creator, one's life is wasted in vain.

२. जो न सुनहि जसु परमान्नदा ॥
पसु पंखी तृगद जोनि ते मंदा ॥ पंना १८८

2. जो इन्सान महान प्रसन्नता स्वरूप की शोभा नहीं सुनते वह जानवरों, पक्षीयों और रेंगने वाली योनियों से भी बुरे हैं।

2. They who do not hear the praises of the Supreme Bliss (God) are worse then the animals, birds and the species of creeping creatures.

३. जिनी नामु विसारिआ बहु करम कमावहि होरि ॥
नानक जम पुरि बधे मारीअहि जिउ सन्नी उपरि चोर ॥ १ ॥ पंना १२४७

3. जो प्रभु जी को भुला कर और बहुत कर्म करते है, वह ध्र्मराज के दरबार में पकड़कर, सेंध लगाते हुए पकड़े गए चोर की तरह मारा जाता है, हे नानक।

3. Those, who forget the Lord's Name and do many other deeds, they are bound and beaten in the justicier's court (yama's place) like a theif caught one the spot, while trying to commit burglary, O'Nanak.

४. आपि जपाए जपै सो नाउ ॥
आपि गावाए सु हरि गुन गाउ ॥ पंना २७०

4. जिस को प्रभु आप जपवायं वह ही उस का नाम जपता है। केवल वह ही प्रभु के गुण गाता है जिस से वह खुद गवाये।

4. He whom God Himself helps to repeat, repeats His Name. He alone sings God's praise, whom He Himself causes to sing.

५. भाई रे रामु कहहु चितु लाइ ॥

हरि जसु वखरु लै चलहु सहु देखै पतीआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंना २२

5. हे भाई, पूरा ध्यान जोड़ कर नाम जपा प्रभु के यश बड़ाई का सौदा साथ ले कर जा। मालिक इस को देख कर पतीज जाएगा। ठहराव।

5. O' brother, repeat God's Name by fixing your attention on God. Take along and depart with God's praises, the Spouse shall view and be satisfied. Pause.

६. गुण गावै अबिनासीऐ जोनि गरभि न दधा ॥ पंना ३२०

6. जो अकाल पुरख का यश गाता है वह गर्भ की योनियों में नहीं सड़ता।

6. He who sings the praises of the Imperishable (Lord) is not burnt is existences.

७. दइआ करहु नानकु गुण गावै मिठा लगै तेरा भाणा ॥ पंना ७४८

7. हे प्रभु, नानक पर रहमत कर ताकि वह तेरी शोभा गायन करे और तेरा हुक्म उस को मीठा लगे।

7. O' Lord show mercy unto Nanak, that he may sing Your praises and Your will may he relish.

८. इक नानक की अरदासि जे तुधु भावसी ॥
मै दीजै नाम निवासु हरि गुण गावसी ॥ पंना ७५२

8. नानक एक विनती करता है, हे प्रभु जे तूझे मंजूर हो तू मुझे अपने नाम के अंदर निवास दे दे ताकि मै सदा तेरी महिमा गायन करता रहूँ।

8. Nanak makes a suplication, O' Lord, if you accept, please bless me with an abode in Your Name, so that I may ever sing Your praises.

९. गुण गावै नानक दासु सतिगुरु मति देइ ॥ पंना ७५३

9. हे सदैव प्रभू मुझे ऐसी बुि( दो कि सेवक नानक सदा ;तेराद्ध यश गाता रहे।

9. O' True Lord bless me with such wisdom that slave Nanak may ever continue singing (Your) praises.

१०. विणु तुधु होरु जि मंगणा सिरि दुखा कै दुख ॥
देहि नामु संतोखीआ उतरै मन की भुख ॥ पंना ९५८

10. तेरे ;नामद्ध के बिना और जो कुछ भी मांगना है वह सब से बड़ी तकलीपफ बुलाना है। तु मुझे अपना नाम दे दे ताकि मैं संतोषी हो जाउफ और मेरे मन की भुख खत्म हो जाए।

10. To ask for anything other than You (Your Name) O' Lord creates arch afflication of all the afflications. Bless me with Your Name so that I may feel contented and my mind's hunger be satisfied.

११. प्रभ इहै मनोरथु मेरा ॥
कृपा निधान दइआल मोहि दीजै करि संतन का चेरा ॥ रहाउ ॥ पंना ५३३

11. हे स्वामी केवल यही मेरे मन की इच्छा है। हे कृपा के खजाने, हे दया के घर मालिक जी, मुझे अपने संतो का सेवक बना दो।ठहराव।

11. O' Lord this alone is my heart's desire. O' the Treasure of kindness, my Merciful master, make me the slave of Your saints. Pause.

**१२. अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥**
**नानक दासु इहै सुखु मागै मो कउ करि संतन की धूरे ॥ पंना १३**

12. हे सब के दिलों की जानने वाले, समर्थ सृजनहार जी, मेरे दिल की यह इच्छा है। सेव नानक यह दान मांगता है। मुझे साधूओं के चरणो की धूल बना दो।

12. O' Lord, knower of inner feelings, Almighty Creator fulfill my heart's yearning. Servant Nanak asks for this gift, make me the dust of the feet of Your saints.

q q q

# 12. कर्म पफल

जीव को हर कर्म का पफल भोगना पड़ता है। अच्छे और नेक कर्मो का पफल अच्छा और बुरे कर्मो का पफल बुरा मिलता है। प्रभु की हजुरी में बैठा धर्मराज जीवों को कर्म पफल भुगतवाता है। किसी के साथ रोष गिला नहीं करना। जीव के किए हुए कर्म ही जीव को दुखी करते हैं, माया के मोह में बांध्ते है और यमों के वश में कर देते हैं। सभ कर्मो का पफल आवागमन में से नहीं निकलता और प्रभु चरणों से प्रीति नहीं पड़ती। यह प्राप्ती प्रभु कृपा द्वारा होती है। यह डर मन में दृढ़ हो तब जीव भक्ति करने लगता है। बुरे कर्म छोड कर अच्छे कर्म करने का यत्न करता है। यह डर दृढ़ किए बगैर जीव भक्ति नहीं कर सकता। प्रभु जी की भक्ति प्रभु के साथ प्यार कर लेना है, इतना प्यार कि कभी भूले ही ना। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार, आशा, तृष्णा, निदां, चुगली, चितां, पिफक्र, हक पराया, रचना के मोह आदि को त्यागना है और अच्छे कर्म करने है। सब से उत्तम कर्म साधू की संगति में मिल कर प्रभु की कीर्ति करनी है और प्रभु को अंग संग जानना है।

# 12. REACTION OF ACTIONS

The soul has to undergo reaction of every action. Good deeds bear good fruit and bad deeds create misery. The justicier (Dharam Raj), in the presence of God makes the souls undergo the reaction of their actions. One should not get annoyed with others as one's own actions create discomfort and misery for him, attach him to creation, increase ego and make him undergo punishment through subordinates of the justicier. One undergoes the reaction of all actions through incarnations in various species and the soul cannot get emancipation by deeds and never merges in the lotus feet of the Lord. This is achieved only through His grace. If the soul accepts this principle only then the soul can develop devotion for the Lord. Fear is created in the mind and the soul makes conscious effort to leave bad deeds and to do good deeds. Unless this fear is instilled in the mind the soul cannot develop devotion for the Lord. Devotion for the Lord is to develop love and affection for God in the mind, so much love and affection that the mind never forgets Him and ever obeys His instruction. The mind must leave lust, wrath, greed, attachement, pride, desire, slander, backbiting, tension, usurping rights of others, affection for creation,etc.and do good deeds. The best action of all actions is to sing praises of the Lord in the company of a blessed soul and to develop a feeling in the mind that one is living in the presence of God.

## सत्यापन के लिए गुरबाणी

१. पुन्नी पापी आखणु नाहि ॥
करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥
आपे बीजि आपे ही खाहु ॥
नानक हुकमी आवहु जाहु ॥ २० ॥ पंना ४

1. अच्छे और बुरे कर्म कहावत नहीं है ;इन्सान अच्छे और बुरे कर्मो के करने से बन्ते हैं। जैसे काम जीव बार-बार करता है वैसे संसकार मन में बन्ते जाते हैं। व्यक्ति आप बीज बीजता है और पफल भोगता है। प्रभु के हुक्म के अधिन जीव दुनिया में आते और यहां से जाते हैं ;अपने कर्मो का पफल भोगने के लिएद्ध हे नानक।

1. Virtuous or vicious deeds is not just a saying (man becomes virtuous or vicious due to his deeds). The often repeated actions are engraved in the mind. Himself one sows and himself one reaps. Under God's command souls come into and go from the world (to undergo the reaction of their actions) O' Nanak.

२. चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥ पंना ८

2. सब अच्छाईआं और बुराईयों को धर्मराज प्रभु की हजूरी में देखता है। अपने अपने कर्मो अनुसार कई ;स्वामी

2. All virtuous or vicious deeds are examined by the justicier (Dharamraj) in the presence of the

केह्न नजदीक और कई दूर होते हैं।

Lord. According to their respective deeds some shall be near and some distant (from the Lord).

## ३. नानकु आखै रे मना सुणीऐ सिख सही ॥
## लेखा रबु मंगेसीआ बैठा कढि वही ॥
## तलबा पउसनि आकीआ बाकी जिना रही ॥
## अजराईलु फरेसता होसी आइ तई ॥ पंना ६५३

3. नानक कहता है, हे मन सच्ची शिक्षा श्रवण कर। न्याय करने बैठा प्रभु अपना बही खात निकाल कर तेरे कर्मो का हिसाब किताब पूछेगा। मालिक के बागी, जिन के जिम्मे बकाया है, बुलाये जाऐंगे। मौत का दूत ;यमह्न अजराईल ;उन को सजा देने के लिएह्न चुना जाएगा।

3. Says Nanak, hear O' my mind the true instruction.Seated in judgement and taking out His ledger, God shall call you to account. The rebels, with outstanding against them shall be called out. the death's courier (Jam), Azrail shall be appointed (to punish them).

## ४. कीता आपो आपणा आपे ही लेखा संढीऐ ॥ पंना ४७३

4. हर एक को अपने कर्मो का पफल भोगना पड़ता है और अपना हिसाब किताब चुकता करना पड़ता है।

4. Every one has to reap the fruit of his own actions and adjust his account.

## ५. जैसा करे सु तैसा पावै ॥
## आपि बीजि आपे ही खावै ॥ पंना ६६२

5. जिस तरह के काम जीव करता है वैसे ही पफल पाता है। जीव स्वंय ही बीजता है और स्वंय ही पफल खाता है।

5. As one acts so is he rewarded. As he himself sows, so does he himself eat (reap).

## ६. अगै करणी कीरति वाचीऐ बहि लेखा करि समझाइआ ॥ पंना ४६४

6. आगे ;अगली दुनीया मेंह्न जीव के कर्म ;अच्छे या बुरे जो रचना से संबंधित हैंह्न और उस द्वारा की गयी ;प्रभु कीह्न कीर्ति जांची जातह है और हिसाब उस को समझा दिया जाता है ;ध्र्मराज द्वारा जो बैठा पफैसले करता हैह्न।

6. There (in the other world) his actions (good or bad releated to creation) and his singing of the praises of the Lord, are examined and his account is explained to him (by the justicier seated in judgement).

## ७. रोसु न काहू संग करहु आपन आपु बीचारि ॥
## होइ निमाना जगि रहहु नानक नदरी पारि ॥ पंना २५६

7. किसे से गुस्सा गिला ना कर और अपने आप की बीचार कर-अपने कर्मां की पड़ताल कर ;जिन के कारण दुखी हैह्न। नमृता सहित संसार में रह और प्रभु की दया द्वारा पार

7. Be not angry with any one and examine your ownself i.e. your own deeds (wich bring miseries). Abide humble in the world, O' Nanak and by God's

उतर जाएगा।

grace you shall be delivered.

८. ददै दोसु न देऊ किसै दोसु करंमा आपणिआ ॥
जो मै कीआ सो मै पाइआ दोसु न दीजै अवर जना ॥ पंना ४३३

8. मैं किसी पर इलजाम नहीं लगाता। कसूर मेरे अपने कर्मो का है। जो कुछ मैनें किया है उस का पफल पाता हूँ। मैं किसी और का कसूर नहीं निकालता।

8. I do not impute blame to anyone. The fault is of my own deeds. What ever I did for that I have suffered, I blame no one else.

९. फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ ॥
देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ ॥ पंना १३८१-८२

9. हे पफरीद, बूरे का भी भला कर और मन में क्रोध ना ला। तेरे शरीर को बीमरी नहीं लगेगी और तुझे सब कुछ प्राप्त हो जायेगा।

9. O' Farid, do good in return for evil and harbour not wrath in your mind. Your body shall not be infested with disease and you shall obtain everything.

१०. करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥ पंना २

10. कर्मो द्वारा शरीर मिलता है और स्वामी की दया द्वारा मुक्ति द्वार ;मिलता हैद्ध।

10. By actions the physical robe (body) is obtained and by the Lord's benediction the gate of salvation (is obtained).

११. भै बिनु भगति न होवई नामि न लगै पिआरु ॥ पंना ७८८

11. डर बिना ;कि हर कर्म का पफल भोगना पड़ता हैद्ध प्रभु की प्रेम सेवा नहीं हो सकती है और नाम के साथ प्यार नहीं पडता है।

11. Without fear (that one has to undergo the reaction of every action), one cannot do devotional service, nor can one develop love and affection for the Name.

१२. भै बिनु घाड़त कचु निकच ॥
अंधा सचा अंधी सट ॥ पंना १५१

12. जो कुछ भी डर बिना बनाया जाता है वह बिल्कुल ही व्यर्थ होता है। पफजूल है सांचा और पफजूल है उस से बनी वस्तु।

12. What is fashioned without fear is altogether worthless, useless is the mould and useless the product there from.

१३. भै बिनु कोइ न लम्घसि पारि ॥ पंना १५१

13. डर बगैर कोई वस्तु भी संसार समुंद्र से पार नहीं कर सकता।

13.Without fear none can cross the world ocean.

१४. हरि भगति हरि का पिआरु है जे गुरमुखि करे बीचारु ॥ पंना २८

14. प्रभु की प्रेम सेवा प्रभु से प्रीति करना है। केवल गुरू अनुयायी यह

14. Devotional service of the Lord is to develop love and affection

बात समझता और मानता है।

for Him. Only the Guru ward understands and accepts this.

## १५. रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी मछुली नीर ॥ पंना ६०

15. हे मेरे मन, प्रभु जी से इतना प्यार कर जितना मछली का पानी के साथ है।

15. O' my mind, enshrine as much love for God as the fish has for water.

## १६. छोडहु काम क्रोधु बुरिआई ॥
## हउमै धंधु छोडहु लम्पटाई ॥
## सतिगुर सरणि परहु ता उबरहु
## इउ तरीऐ भवजलु भाई हे ॥ पंना १०२६

16. विषय भोग, गुस्सों और बुराई को त्याग दे। अबर तू सच्चे गुरू की शरण ले केवल तब ही तेरा छुटकारा होगा। इस तरह, हे भाई भयानक संसार समुंद्र से पार उतरा जाता है।

16. Renounce lust, wrath and wickedness. Renounce all involvement in the deeds of pride. If you take True Guru's refuge then alone shall you be saved. This wise, O' brother the dreadful world ocean is crossed.

## १७. हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥ पंना १४१

17. नानक औरों का हक ;मारनाद्ध उस ;मुसलमानद्ध के लिए सूअर और उस ;हिन्दूद्ध के लिए गाय ;खाने समानद्ध है।

17. Nanak (usurping) another's right is swine for him (the Musalman) and cow for him (the Hindu).

## १८. परहरि काम क्रोधु झूठु निंदा तजि माइआ अहंकारु चुकावै ॥
## तजि कामु कामिनी मोहु तजै ता अंजन माहि निरंजनु पावै ॥ पंना १४१

18. भोग विलास की खुशीआं, गुस्सा, झूठ और झूठे कलंक ;दुसरों परद्ध लगाने त्याग, संसार का मोह छोड़ और अभियान को दूर कर। छैल छबीली स्त्राी की विषे चेष्टा को त्याग और संसारी ममता को तिलांजली दे। तब ही तू अंधेरे संसार ;जिस को माया की कालिख लगी हैद्ध में अलिप्त ;प्रभुद्ध को प्राप्त होगाद्ध।

18. Renounce sexual pleasures, wrath, falsehood and calumny, forsake (attachement to) mammon and dispel pride. Put aside the lust for bellies and leave worldly love. Then shall you obtain the Detached Lord amidest the dark world.

## १९. अवगुण छोडि गुणा कउ धावहु करि अवगुण पछुताही जीउ ॥ पंना ५१८

19. पाप त्याग कर अच्छाई ग्रहण कर। पाप कर के तुझे अवश्य ही

19. Forsake sins and pursue virtues. By committing sins you

पछताना पड़ेगा।

shall have to regret.

## २०. दिसटि बिकारी बंधनि बाँधै हउ तिस कै बलि जाई ॥
## पाप पुन्न की सार न जाणै भूला फिरै अजाई ॥ पंना १३२६

20. जो दृष्टि को पाप करने से रोकने के लिए जंजीर से बांध कर रखता है, उस पर मैं कुर्बान जाता हूँ। जो अच्छाई और बुराई के पफर्क को नहीं जानता वह भूला हुआ सही रास्ते से दूर रहता है।

20. Whosoever binds with a bond the evil inclination, unto him I am a sacrifice. He who realises not the difference between evil and good, he astrays from the path uselessly.

## २१. हरि कीरति साधसंगति है सिरि करमन कै करमा ॥ पंना ६४२

21. साधू की संगति में प्रभु की शोभा गायन करनी सब कामों से श्रेष्ठ काम है।

21. Singing the God's praise in the saint's society is the best of all the deeds.

## २२. सगल गुणा गुण ऊतमो भरता दूरि न पिखु री ॥ पंना ४००

22. सब अच्छाओं में से श्रेष्ठ अच्छाई यह है कि कंत ;प्रभुद्ध को दूर ना देख।

22. The sublimest virtue of all the virtues is, not to see the Spouse afar.

q q q

# 13. कुसंगति और संगति

जीव जैसी संगति में रहता है वैसे कर्म करने लग जाता है। कुकर्म करने वालों माया के पुजारीयों, साकतों, मनमुखों की संगति त्यागनी है। नेक कर्म करने वालों, नाम जपने वालों, गुरमुखों की संगति करनी है। पुरे साधू संत, गुरमुखि का मिलाप संयोग अनुसार प्रभु कृपा द्वारा होता है। प्रभु के आगे प्रार्थना करनी है कि साधू की संगति दे। साधू संगति मिले बिना प्रभु नहीं मिलता। जीव को चाहिए के गुरबाणी पर भरोसा और श्र(ा लाए, गुरबाणी से प्यार करे और उपमा और प्रार्थना के शब्द ध्यान जोड़ कर, भाव मन अर्थ में टिका कर प्रम भावना सहित गाए और प्रभु से पूरे संत की संगति मांगता रहे। प्रभु ऐसी आत्मा पर कृपा करते हैं और जीव को सही संगति में रखते हैं।

# 13. SOCIETY- BAD AND GOOD

An indiidual starts living and acting as per the company and environment in which he lives. One should shun the company of those who indulge in bad actions, are subervient to creation, are attached to creation and are self willed. The individual should seek and live in the company of those who do good deeds, recite Naam and are blessed by God. One can only get the company of a true saint according to his fate and by the grace of God. One should pray to God and seek company of a blessed soul as unless one meets a blessed soul one cannot experience God. The individual should have complete faith in the God'sWord, should develop affection for the God's Word, praise the Lord, pray to Him, with the help of the God's word, absorbing its meaning, keeping love for God in the mind and always seek company of a blessed soul from God. God helps such a soul and places him in correct environment and company.

## सत्यापन के लिए गुरबाणी

१. कबीर मनु पंखी भइओ उडि उडि दह दिस जाइ ॥
जो जैसी संगति मिलै सो तैसो फलु खाइ ॥ पंना १३६६

1. कबीर, मन पक्षी की तरह उड़ उड़ कर, दस दिशाओं में जाता है। जैसी संगति में यह जुड़ता है वैसा ही पफल यह खाता है।

1. Kabir, the mind, like a bird flying and taking wing, it goes in ten directions. As is the company it associates, so is the fruit it eats.

२. जैसा सेवै तैसो होइ ॥ पंना २२३

2. जैसे जीव की सेवा करता ;हुक्म मानताद्ध है वैसा ही जीव हो जाता है।

2. As is the one whom he serves, so does he himeslf become.

३. कबीर साकत संगु न कीजीऐ दूरहि जाईऐ भागि ॥
बासनु कारो परसीऐ तउ कछु लागै दागु ॥ पंना १३७१

3. कबीर अर्धमी ;माया का पुजारीद्ध से मेल-मिलाप ना कर और उस से दूर भाग जा। अगर तू काले बर्तन को हाथ लगाएगा तो कुछ ध्ब्बा तूझे जरूर लग जायेगा।

3. Kabir, associate not with the infidel and flee far away from him. If you touch a black vessel, then some blot must attach to you.

४. जेहा सेवै तेहो होवै जे चलै तिसै रजाइ ॥ पंन ५४६

4. जिस की सेवा जीव करे उस

4. Whomsoever you serve you

जैसा हो जाता है, अगर उस के हुक्म अनुसार चले ;कर्म करेद्ध

become like him if you live according to his instruction.

## ५. ते साकत चोर जिना नामु विसारिआ मन तिन कै निकटि न भिटीऐ ॥ पंना १७०

5. ऐसे माया के पुजारी जिन्हाने मालिक का नाम भुला दिया है चोर हैं। मरे मन उन के नजदीक ना जा।

5. Such materialists, who have forgotten the Lord's Name, are thieves. O' my mind do not live in their company.

## ६. उलटी रे मन उलटी रे ॥ साकत सिउ करि उलटी रे ॥ पंना ५३५

6. वापिस आ जा, हे मन वापिस आ जा। हे, माया के पुजारियों से वापिस आ जा।

6. Turn away O' my soul turn away, O' trun away from the apostate (infidel).

## ७. साधसंगि होइ निरमला नानक प्रभ कै रंगि ॥ पंना २६७

7. साधू की संगति में प्रभु के प्यार में रंग जाने से मन पवित्रा हो जाता है, हे नानक।

7. Tinctured wih the Lord's love, in the company of a saint, the mind is purified, O' Nanak.

## ८. महा पवित्र साध का संगु ॥ जिसु भेटत लागै प्रभ रंगु ॥ पंना ३६२

8. परम पवित्रा है संत की संगति, जिस मे मिलने से स्वामी से प्रेम हो जाता है।

8. Supremely pure is the society of a saint, joining which love for the Lord is embraced.

## ९. पानी पखा पीसउ संत आगै गुण गोविंद जसु गाई ॥ पंना ६७३

9. मैं संत के लिए जल ढोता हूँ, उस को पंखा करता हूँ, उस के दाने पीसता हूँ और सृजनहार की शोभा गायन करता हूँ ;उस की संगति मेंद्ध।

9. I carry water for, wave the fan over and grind the corn of the saint and sing the glory and praise of the Creator (in his company).

## १०. साधु मिलै पूरब संजोग ॥ पंना १५३

10. पिछले संयोग द्वारा संत मिलता है।

10. The sain is met through primal destiny.

## ११. बिनु साध न पाईऐ हरि का संगु ॥ पंना ११६६

11. संत ;की संगतिद्ध के बगैर प्रभु प्राप्त नहीं होता।

11. Without the (company of the) saint, God's association is not obtained.

## १२. जिसु करमु होवै तिसु सतिगुरु मिलै सो हरि हरि नामु धिआए ॥ पंना ८५१

12. जिस पर ईश्वर की कृपा हो उस को सच्चा गुरू मिलता है। केवल वह ही प्रभु के नाम का ध्यान करता है।

12. He, on whom is God's grace, meets the True Guru. He alone meditates on the Lord God's Name.

१३. धुरि खसमै का हुकमु पइआ विणु सतिगुर चेतिआ न जाइ ॥ पंना ५५६

13. बिल्कुल प्रारंभ से ही मालिक का यह हुक्म है कि सच्चे गुरू ;को मिलेछ्र बगैर प्रभु को याद नहीं किया जा सकता।

13. From the very begining it is the will of God, that He cannot be remembered without (meeting) the True Guru.

१४. सतिगुर बाझु न पाइओ सभ मोही माइआ जालि जीउ ॥ पंना ७१

14. सच्चे गुरू के बिना ;हे प्रभुछ्र तू नही मिलता। सब ;सृष्टिछ्र माया के पफंदे में लोभएमान हो के, पफसी हुई है।

14. Without the True Guru, (O'Lord) You are found not. All are enticed into the net of mammon.

१५. जसु कृपा करे प्रभु आपणी तिसु सतिगुर के चरण धोइआ ॥ पंना ३०६

15. जिस पर प्रभु अपनी कृपा करता है वह सच्चे गुरू के पैर धैता है।

15. He, to whom the Lord shows His mercy, washes the feet of the True Guru.

१६. होहु कृपाल सुआमी मेरे संताँ संगि विहावे ॥ पंना ६६१

16. ;मुझ परछ्र कृपा करो। हे मेरे मालिक, ताकि मेरा जीवन संतों की संगति में व्यतीत हो।

16. Be graceful, O my Lord, that I may pass my life in the society of saints.

१७. खाकु संतन की देहु पिआरे ॥
आइ पइआ हरि तेरै दुआरै ॥ पंना ६८

17. मुझ संतों के चरणो की धूल प्रदान की, हे प्यारे ;प्रभुछ्र। मैं आ कर तेरे दरवाजे पर गिर पडा हूँ। हे ईश्वर।

17. Bless me with the dust of saint's feet, O'beloved (Lord). I have come and lie prostate at your gate, O' Lord.

१८. दोजकि पउदा किउ रहै जा चिति न होइ रसूलि ॥ पंना ३१६

18. जीव नरक में जाने से किस तरह बच सकता है अगर अपने धर्मिक उस्ताद ;गुरूछ्र को याद नहीं रखता।

18. How can one escape falling in to the hell, when he remembers not i.e. forgets his religious teacher (Guru).

१६. ऐसी माँगु गोबिद ते ॥
टहल संतन की संगु साधू का
हरि नामाँ जपि परम गते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंना १२६८

19. हे मेरे मन, सृजनहार ने यह दान मांग, साधूओं की सेवा, संतो की संगति, प्रभु नाम का जाप, और नाम

19. O' my mind seek from the Creator such boons; service of saints, society of pious persons,

जप कर सब से उफचीं अवस्था ;महान मुक्तिब्द्ध प्राप्त हो। ठहराव।

meditation on God's Name and through this supreme salvation. Pause.

## २०. करि साधसंगति सिमरु माधो होहि पतित पुनीत ॥ पंना ६३१

20. साधू की संगति में मिल कर माया के मालिक को प्यार से जप। इस तरह तू पापी से पवित्रा हो जाएगा।

20. Join the society of the saint and remember the Lord of creation, with love and affection and you shall become holy from a sinner.

## २१. गुर की बाणी सिउ रंगु लाइ ॥ गुरु किरपालु होइ दुखु जाइ ॥ पंना ३८७

21. गुरू की बाणी से प्यार कर ले। ;इस तरहब्द्ध प्रभु मेहरबान हो जाएगा और तेरा ;अहंकार काब्द्ध दुख दूर हो जाएगा।

21. Develop love for the Guru's Word. (In this manner) The Lord shall become merciful and your pain (of ego) shall be destroyed.

## २२. गुर की बाणी सिउ लाइ पिआरु ॥ ऐथै ओथै एहु अधारु ॥ पंना १३३५

22. गुरू की बाणी से प्यार कर ले। लोक और परलोक में यह ;गुरबाणीब्द्ध ही सहारा है।

22. Develop love for the Guru's Word. Here (in this world) and hereafter (in the next world) this (the Guru's Word) alone is the support.

## २३. सतिगुर की बाणी सदा सुखु होइ ॥ जोती जोति मिलाए सोइ ॥ पंना ११७५

23. सच्चे गुरू की बाणी द्वारा सदीवी सुख प्राप्त होता है। इसके द्वारा आत्मा परमात्मा से मिल जाती है।

23. Through the True Guru's Word, eternal peace is procured. Through it (the Guru's Word) the soul merges in the Superme Soul.

## २४. सतिगुर कै भाणै जो चलै हरि सेती रलिआ ॥ पंना १२४५

24. जो कोई गुरू के हुक्म ;शबदब्द्ध अनुसार चलता ;जीव व्यतीत करताब्द्ध है, वह प्रभु से मिल जाता है।

24. He, who obeys the Guru's Order (Word). i.e. lives accordingly, merges with the Lord.

# 14. व्यर्थ कर्म

नाम स्मरण के बिना अन्य कर्म व्यर्थ है और यह कर्म, ध्र्म के कर्म समझ कर करने ऐसे भ्रम ही हैं। कर्मो का पफल ध्र्मराम देता है और आत्मा आवागमन में भटकती है और सदा दुखी रहती है क्योंकि नाम बगैर दुख ही दुख है। नाम में निवास से ही आत्मा सुखी होती है। अन्य कर्म जीव कितने ही अच्छे करे पर अगर प्रभु से प्यार नहीं हुआ तो नरक में जाता है। प्रभु से प्यार गुण गा के ही होता है और संसार सागर पार किया जाता है।

## 14. FRUITLESS ACTIONS

All other actions/deeds except that of remembring God with deep love and affection are useless. Doing such actions and deeds and considering these as religious deeds is just a mirage and self deception. All actions are accounted for by the justicier and rewards (for good actions) and punisments (for bad actions) are awarded and the soul undergoes these in a cycle of births and deaths. Without God's realisation the soul ever remains miserable as the soul can never be happy and satisfied without merging with God/Naam. The soul ever enjoys if it merges in Naam. Unless the soul develops total love and affection for God it has to suffer in hell even if it has done extremely good deeds in life. Love for God wells up in the mind by singing His praises and the soul is ferried across the ocean of creation

## सत्यापन के लिए गुरबाणी

१. नाम बिना फोकट सभि करमा जिउ बाजीगरु भरमि भुलै ॥ पंना १३४३

1. नाम के बिना सब काम व्यर्थ है ;और यह करने वाले ऐसे भूले हुए हैद्ध जिस तरह कोई मदारी खुद ही अपने ऐकटिंग के रोल को सच्चा समझ ले।

1. Without the Name,vain are all other deeds like those of the conjurer, if he himself is deceived by illusion (of his role).

२. हरि बिनु अवर कृआ बिरथे ॥
जप तप संजम करम कमाणे इहि ओरै मूसे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंना २१६

2. भगवान ;की यादद्ध बिना और काम निशपफल हैं। मुख का पाठ, तपस्या, स्वः नियत्राण और अन्य संस्कार करने वाले गलत रास्ते पड़ कर ठगे ;लूटेद्ध जाते हैं।ठहराव।

2. Without (remembering) God all other deeds are in vain. Recitation penance,efforts for self control and performing other rites one goes astray (from the correct path) and is plundered. Pause.

३. करमी सहजु न ऊपजै विणु सहजै सहसा न जाइ ॥ पंना ६१६

3. कर्मों से ब्रहमज्ञान ;जो सहज अवस्था मन में पैदा करता हैद्ध उत्पन्न नहीं होता और बिना ब्रह ज्ञान के शंका की निवृति नहीं होती।

3. By actions Divine knowledge (which provides eternal balance of mind) is not produced and without Divine knowledge doubt does not depart.

४. बिनु नावै होरु कमावणा फिका आवै सादु ॥ पंना १३४३

4. नाम ;गुरबाणी मानने के बगैर जो कुछ भी जीव करता है, उस का स्वाद पफीका ही आता है।

4. Insipid is the flavour of anything else one may do, except obying the Name (Guru's Word)

५. नानक बिनु नावै सभु दुखु सुखु विसारिआ ॥ पंना ८६

5. हे नानक, नाम के बगैर सब दुख ही दुख है और खुशी भूल जाती है। भाव कभी नहीं होती।

5. O' Nanak, without the Name all is suffering and happiness is forgotten.

## ६. हिरदै सचु एह करणी सारु ॥
## होरु सभु पाखंडु पूज खुआरु ॥ पंना १३४३

6. ;तूद्ध मन में सच्चे नाम को टिका। केवल यह ही श्रेष्ठ कर्म है। तबाह करने वाले हैं और सारे ध्ै और उपासनाऐं।

6. Enshrine the True Name in (your) mind. This alone is the sublime deed. Ruinous are all other hypocracies and worships.

## ७. सगल सृसटि को राजा दुखीआ ॥
## हरि का नामु जपत होइ सुखीआ ॥ पंना २६४

7. ;चाहे कोईद्ध संसार का बादशाह बन जाए पिफर भी ;वहद्ध दुखी रहता है। जो प्रभु का नाम जपता है वह सुखी हो जाता है।

7. (Even if one becomes) The king of the whole world (he) remains miserable. He who repeats God's Name becomes happy.

## ८. नाम संगि मनि प्रीति न लावै ॥
## कोटि करम करतो नरकि जावै ॥ पंना २४०

8. अगर किसी का नाम के साथ दिल से प्यार नहीं होता तो चाहे वह करोड़ो कर्म करें वह नरक में जाता है।

8. One who embraces not love and affection for the Name goes to hell, even if he performs millons of other deeds.

## ९. एक भगति भगवान जिह प्रानी कै नाहि मनि ॥
## जैसे सूकर सुआन नानक मानो ताहि तनु ॥ पंना १४२८

9. जिस जीव की अंतर आत्मा मे प्रभु का प्यार नहीं हैं, हे नानक उस के शरीर को तू कुत्ते और सूअर का शरीर जानद्ध।

9. The mortal who enshrines not the devotion of one Lord in his mind, O' Nanak deem his body to be like that of a pig or a dog.

## १०. इहु सागरु सोई तरै जो हरि गुण गाए ॥पंना ८१३

10. केवल वह ही इस ;संसारद्ध समुंद्र से पार होता है जो प्रभु के गुण गाता है।

10. He alone crosses this (world) ocean who sings the Lord's praises.

## ११. नानक सचु कहै बेन्नती सचु मिलै गुण गावणिआ ॥ पंना १०९

11. नानक सही विनती करता है कि सच्चा मालक उस का यश गाने से मिलता है।

11. Nanak makes a true suplication. The true Lord is obtained by chanting His glories.

# 15. तथ्य सार

उपदेश भाव शिक्षा गुरबाणी से लेनी है, संगति गुरमुखि की करनी है और आसरा अकाल पुरख का लेना है। मेहनत करके कमाना और निर्वाह करना है। इसमें से जरूरतमंद की सहायता करनी है। नाम बिना सब दुख ही दुख है। सुरति नाम बाण से जुड़े तब सुखी होती है। अगर नाम से प्यार हो जाए तो सुरति यदा नाम से जुड़ी रहती है और सदा के लिए सुखी हो जाती है। सुख प्राप्ती का और कोई साध्न नहीं है।

# 15. GIST OF INSTRUCTION

One should get instruction from the God's Word, live in the company of a saint and always depend on the Timeless Almighty God. One should earn one livelihood and share his income with the needy. Soul ever remains miserable until it develops love and affection for God and merges with Him and His word. If the soul develops love for God, it ever remains merged with Him and remains happy. There is no other way to achieve happiness and satisfaction

## सत्यापन के लिए गुरबाणी

### १. गुर की मति तूं लेहि इआने ॥ पंना २८८

1. हे ना-समझ तू गुरू की बुर्( ले ;ग्रहण करद्ध।

1. Accept the advice of the guru, O' silly man.

### २. नानक सबदु वीचारीऐ पाईऐ गुणी निधानु ॥ पंना ५६

2. नानक, शब्द ;बाणीद्ध को मानने से गुणों का भंडार ;प्रभुद्ध प्राप्त हो जाता है।

2. Nanak,by obying the Word, the Lord, Treasure of Excellences, is obtained.

### ३. बिनु गुर सबद न छूटसि कोइ ॥ पंना ८३६

3. प्रभु जी के उपदेश ;को मानेद्ध बिना किसी की मुक्ति ;अहंकार के पफंदे में सेद्ध नहीं होती।

3. Without (obeying) the Guru's Word (instruction) no one can be released (from the clutches of ego).

### ४. सभसै ऊपरि गुर सबदु बीचारु ॥
### होर कथनी बदउ न सगली छारु ॥ पंना ६०४

4. प्रभु जी के हुक्म को मानना सब से उत्तम है। मै और बहसों में नहीं पड़ता क्योंकि और सब राख बराबर है।

4. To obey the God's instruction is above every thing. I utter not any other discourse, as all else is but rubish.

### ५. सतिगुर की बाणी सति सरूपु है गुरबाणी बणीऐ ॥ पंना ३०४

5. प्रभु जी की बाणी प्रभु-रूप है। गुरबाणी जैसा बन ;इस अनुसार जीवन व्यतीत करद्ध।

5. The God's Word is the embodiment of Truth (God). Be like the God's Word i.e. live accordingly.

### ६. अंतरि प्रेमु परापति दरसनु ॥
### गुरबाणी सिउ प्रीति सु परसनु ॥ पंना १०३२

6. ;प्रभुद्ध दर्शन की अगर किसी को इच्छा हो तो वह गुरबाणी से प्यार कर ले, उस को ;प्रभुद्ध दर्शन हो जाऐंगे।

6. If one loves to obtain the (Lord's) vision, he should develop affection for the Guru's Word and he shall obtain His vision.

७. सबदै ही ते पाईऐ हरि नामे लगै पिआरु ॥ पंना ५८

7. बाणी द्वारा प्रभु प्राप्त होता है। और उस के नाम से प्यार होता है।

7. Through the Word, God is obtained and love is developed for His Name.

८. करि साधसंगति सिमरु माधो होहि पतित पुनीत ॥ पंना ६३१

8. साधू की संगति में माया के मालिक को प्यार से जप। इस तरह तू पापी पवित्रा हो जायेगा।

8. Join the society of a saint and remember the Lord of creation, with love and affection. From a sinner you shall become holy.

९. हम संतन की रेनु पिआरे हम संतन की सरणा ॥
संत हमारी ओट सताणी संत हमारा गहणा ॥ पंना ६१४

9. हे प्यारे, मैं संतो के चरणों की धूल हूँ और संतो की शरण पड़ता हूँ। संत ही मेरा ताकतवर आसरा है और संत ही मेरा गहना आभूषण है।

9. I am dust of the feet of the saints O' dear and I seek their protection. The saints are my powerful prop and the saints are my ornaments.

१०. हम होवह लाले गोले गुरसिखा के
जना अनदिनु हरि प्रभु पुरखु धिआइआ ॥ पंना ४६३

10. मैं गुरू के सिखों का, जो दिन रात सर्व-शक्तिमान ईश्वर का ध्यान करते है, सेवक और गुलाम हूँ।

10. I am the slave and serf of the Guru's sikhs, who night and day meditate on the Omnipotent Lord God.

११. प्रणवति नानक तिन की सरणा जिन तू नाही वीसरिआ ॥ पंना १२

11. नानक कहता है ''मै उन की शरण पड़ता हूँ जिन ;संतोब्द्ध को तू नहीं भूलता ;हे मालिकब्द्ध।''

11. Says Nanak "I take shelter of those (saints) who never forget You (O' Lord)".

१२. गुरमुखि करणी कार कराए ॥
नानक गुरमुखि मेलि मिलाए ॥ पंना ६४२

12. गुरमुखि दूसरों को सही कर्म और कार्य ;गुरबाणी अनुसारब्द्ध करने लगा देता है। हे नानक, गुरमुखि दूसरों को प्रभू से मिला देता है।

12. The Guru-ward helps others to practice correct deeds and actions. (as per God's word). O' Nanak the Guru-ward helps others to merge with the Lord.

१३. कहत कबीर सुनहु रे प्रानी छोडहु मन के भरमा ॥
केवल नामु जपहु रे प्रानी परहु एक की सरनाँ ॥ पंना ६६२

13. कबीर कहता है, हे जीव मन का शंका छोड दे। केवल नाम जप और एक प्रभु की शरण पड हे जीव।

13. Says Kabir, shed your doubt O' mortal. Contemplate only the Name and seek one Lord's asylum, O' mortal.

१४. खसमु छोडि दूजै लगे डुबे से वणजारिआ ॥ पंना ४७०

14. व्यपारी जो प्रभु को भुला कर दूसरो के साथ जुडते हैं, वह डुब जाते हैं।

14. The merchants who forget the Lord and attach themselves to another are drowned.

१५. ता की सरनि परिओ नानक दासु जा ते ऊपरि को नाही ॥ पंना ८२४

15. दास नानक ने उस की शरण ली है जिस से उफपर कोई नहीं है।

15. Slave Nanak has entered His sanctuary, higher than Whom there is none.

१६. गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ ॥
ता कै मूलि न लगीऐ पाइ ॥
घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ पंना १२४५

16. कभी भी उस के पैर ना पड़ो जो गुरू और रूहानी रहबर कहलवाता है और मागने जाता है। जो मेहनत करके कमाता और खाता है और अपनी कमाई में से औरों की सहायता करता है उस को सही रास्ता ;प्रभु मिलाप काद्ध मिलता है।

16. Don't fall at his feet, who calls himself a Guru and a spirtual preceptor and goes begging. He who eats what he earns, through earnest work, and out of it gives to the needy, he alone O' Nanak knows the true way (to merge with God).

१७. जोगी बैसि रहहु दुबिधा दुखु भागै ॥
घरि घरि मागत लाज न लागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंना ९०३

17. हे जोगी अंतर आत्मा में टिक कर बैठ तेरा दैष का दर्द हट जायेगा। दर दर पर मांगते हुए तुझे शर्म नहीं आती। ठहराव।

17. O' yogi settle in your own self and your pain of duality shall be dispelled. Don't you feel ashamed when you go begging from door to door. Pause.

१८. नानक बिनु नावै सभु दुखु सुखु विसारिआ ॥ पंना ८६

18. हे नानक, नाम के बिना दुख ही दुख है और खुशी भूज जाती है।

18. O' Nanak, without the Name all is suffering and happiness is forgotten.

१९. सगल सृसटि को राजा दुखीआ ॥
हरि का नामु जपत होइ सुखीआ ॥ पंना २६४

19. ;चाहे कोईद्ध सारे संसार का बादशाह बन जाए पिफर भी ;वह दुखीद्ध रहता है। जो प्रभु का नाम जपता है वह सुखी हो जाता है।

19. (Even if one becomes) The king of the whole world (he) remains miserable. But he who repeats God's Name, becomes happy.

## २०. नानक विणु नावै आलूदिआ जिती होरु खिआलु ॥ पंना १०६७

20. हे नानक नाम के बिना और
सब ख्याल मैले हैं।

20. O' Nanak, without the Name
all other thoughts are polluted.

## २१. अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण ॥ पंना ७१४

21. हे नानक, अगर तू सदीवी खुशी
चाहता है तो सदा सर्व-व्यापक साई
को प्यार से याद करता रह।

21. O' Nanak if you desire eternal
bliss, ever remember with love
and affection the Omnipresent Lord.

q q q

# गुरबाणी सिद्धांत

1. गुरूबाणी है हुक्म दरगाही, हरि जी में यह सदा समाई।
   बाणी प्रभु है प्रभु है बाणी, भेद ना जानो भाई।
   जीवों ने यह हुक्म है मानना, इस की गुरसिख करे कमाई।
   पूरी उस को समझ में आए, जो मन प्रभु जी में समाए।
   वही गुरसिख, साधु कहाए, संत, दास बन जाए।
   गुर, सतिगुरू है वही, महापुरूष वह दास।
   सिख, भगत है गुरमुखि वही, जन, सेवक जिस प्रकाश।
   मेरी तुच्छ बुर्( अनुसार, जो दी है गुर करतार।
   गुरबाणी का तथ्य सार, ऐसे जापे सुन मन प्यारि।
2. हरि जी एक है सदा सदा है, अनंत गुणों का अनंत भंडार।
   रचना रच के इसमें समाया, पर अलिप्त है इस से पार।
   सब कुछ स्वयं करता है, उस की शरण पड़ होए पफकीर।
   और किसी की शरण नहीं जाना, मन पक्का कर हो तू धिर।
   उस का कोई निश्चित नाम नहीं, वह साहिब तो गुणी गंभीर।
   मिलता है वह गुरू कृपा से, कोई और ढंग नहीं वीर।
3. गुरू वह आत्मा केवल वह ही, जो प्रभु चरणों में समाए।
   बाणी उस को प्रभु से आती, सब को बाणी दृढ़ कराए।
   प्रभु के साथ सब को जोड़े, अपना ध्यान ना कभी कराए।
   बोझ ना संगति पर गुरू बनता, सब जीवों को नाम जपाए।
   काम आदिक उस के वश में होते, सब का भला उस को भाए।
   दुख सुख को वह सम कर जाने, आज्ञा प्रभु की मीठी भाए।
   सदा सदा हरि के गुण गाता, स्वयं मुक्त सब को तारे।
   सच्ची बाणी दुढ़ कराए, और ना देता कोई सहारे।
4. जो मन भी माने सच्ची बाणी, संगति में वह पार परंत।
   देश, ध्र्म की बाँट कोई नहीं, रंग नस्ल का भेद जानंत।
   संगति में गुण गा गा प्रभु के, सारे किए पाप मिटंत।
   जो भी कमाए पार हो जाये, यह बात मन में दृढ़ मानंत।
5. जगत रचना है सारी झूठी, मनुष्य को दी है सरदारी।
   रचना का मोह दुखी है करता, पिफर भी सब को भाए प्यारी।
   जरूरतों से बँध सब जानो, कोई ना किसी का संगी बीर।
   मोह में पफँस कर सभी है दुखी, कोई ना किसी को बँधए धिर।
   हरि जी ने मोह है लगाया, लालच करने हम ने बड़ाया।
   इस कालिख कारण मन काला, निर्मल प्रभु से बहुत है दूर।
   प्रभु के गुण गा कालिख घटती, प्यार पड़ने से चकना चूर।
6. हरि को मिलने की बारी है जीवन, पाया बहुत ध्क्के खा कर।
   अनेक योनियों में से गु-ार कर, समय यह मिला है, यत्न कर।
   साधु की संगत में मिल कर, सदा सदा प्रभु के गुण गा।
   जप जप नाम और स्मरण कर के, हरि के साथ तू प्रीति पा।
   प्रभु कृपा प्राप्त कर के, उस में लीन हो चरनि समा।

अन्य सब कर्म व्यर्थ है भाई, नाम प्रभु का एक ही राह।
कर्मो पर यम दंड लगाए, पुन, दान, तप, हठ ना कबूल।
जप, स्नान, संयम, यज्ञ, योग, निओली कर्म, तू मान पफ-ूल।
रि(ियां, सि(ियां, मौन धरना, बाकी अक्लें काम ना आऐ।
बहुत ध्न दौलत, बड़े राज, आवागमन में सदा घुमाऐं।
साधु प्रभु की शरण दृढ़ाये, अन्य कामों में पफँसने ना दे।
नाम जपे और नाम जपाए, बुरे कर्मो में वह ध्ँसने ना दे।

7. हुक्म प्रभु ने जीवों को लगाया, गुण वीचारों, सुनो और गाओ।
भंडार गुणों का है ईश्वर, गुण गा के मन में बसाओ।
हउमैं रोग की एक दवाई, गुण वीचारो, गाओ, ध्याओ।
गुरबाणी के हुक्म वीचारो, प्रभु कृपा से हुक्म कमाओ।
करो प्रार्थना शरण में जा कर, शब्द कमाउँफ मुझे अपना बनाओ।
विनती और शोभा बिना नहीं चारा, यह दृढ़ करो और यही कमाओ।

8. हुक्म अनंत और बहुत कठिन है, मन हठ से ना जाए कमाया।
साधु की संगति में गुण गा के, मन होए निर्मल गुरू समझाया।
विनती करने से कृपा है होती, याचक माँग माँग ही पाते।
हुक्म मानने की शक्ति बढ़ती, निर्मल मन सदा है ध्याते।
पूरा निर्मल मन शब्द कमाए, हुक्म मान कर हरि रस पाए।
यह रस सारे अवगुण जलाए, किलविख, दोख, पाप लह जाए।
हरि रस ऐसा रसदायक है, माया का मोह ही हट जाए।
माया की यह पकड़ हटाता, काम, क्रोध से मन छुट जाए।
अक्ल, समझ, चतुराई और ध्न दे के, यह हाथ ना आए।
नाम जपो, सिमरो, आराधे, गुर शब्द कमा के पाया जाए।
प्रभु कृपा से यह लीला होती, मेहनत से वह हाथ ना आए।

9. संगति में है दृढ़ता आती, प्रीति नाम की बढ़ती जाती।
सतकार संत का बढ़ता जाता, ऐसे आत्मा पुन्य कमाती।
सेवा राम, संत की करनी, ईश्वर ही है मुक्ती दाता।
संत उस का नाम जपाए, पिफर मन और कहीं ना जाता।
संत की सेवा नाम ध्याना, बाणी माननी, सदा कमाना।
हरि की सेवा भी गुण गाने, गाते, ध्याते चरनि समाना।
और नहीं चारा यही कमा, हरि यश इक्ठा कर ले जा।
संत भी खुश और राम पतीजे, यह काम करके लाभ कमा।

10. बाणी के अर्थो में जुड कर, गुण गाने है सदा सहायक।
प्रेम भावना मन में रख कर, हरि के गुण गाने लाभदायक।
गाओ, सुनो, वीचारो, समझो, गुरबाणी पारस हो जाती।
तोता रटन है सदा व्यर्थ, दरगाह में स्वीकारी ना जाती।
प्रभु की वाह वाह ध्यान जोड़ कर, करते जाओ बढ़ते जाओ।
वाह वाह कहते, शोभा करते, अंत को हरि जी में समाओ।

11. बिन गुण गाए जन्म व्यर्थ, हठ से मन गुण गा नहीं सकता।
प्रभु दया से मन गुण गाए, यह राह आप वह पा नहीं सकता।
प्रभु जी आगे करो विनती, प्राथर्ना करो मेरे वीर।
कृपा करो सदा गुण गाउँफ, यह चंचल मन बाँध् धीर।

बाणी से जुड़ करो विनती, ता जो और ना चीजें माँगे।
ध्यान शब्द से बाहर जो जाए, मन में उठ जाऐं और तरंगे।
और माँगों से दुख उपजते, हरि जी से माँगो चरनि निवास।
गुण गाउँफ, संत संगि समाउँफ, यह ही सदा करो अरदासि।

12. हर कर्म का पफल है मिलता, ध्र्मराज करता इन्सापफ।
अच्छे का अच्छा, बुरे का बुरा, यह बात मन में मानों सापफ।
रोष गिला नहीं कभी भी करना, हर कोई अपना कीया पाए।
जीव बँध् है कर्मो कारण, हर कोई कीये का पफल पाए।
कीये कर्मो का दुख सुख है, जन्म मरन में मिलता वीर।
साथ प्रभु के प्रीति ना होती, ना मन कभी होए धैर।
चरनि निवास है प्रभु कृपा से, शरण जा कर मन होए मीर।
जब मन माने इस हुक्म को, तब प्रभु भक्ति में है लगता।
पिफर गुण गाता, नाम ध्याता, करे प्रार्थना, विनती करता।
काम, क्रोध्, लोभ, अहंकार, आशा, तृष्णा, मोह को मार।
निंदा, चुगली, पिफक्र और चिंता, हक पराया छोड़ो यार।
रचना का मोह नित्य घटाए, प्यार प्रभु का सदा बढ़ाए।
विनती और शोभा के रस्ते लग कर, आगे चलता बढ़ता जाए।
साधु संगति में मिल कर गुण गाने, सब से उतम कर्म यह जान।
हरि को अंग संग सदा जान कर, हुक्म मान और प्रभु पहचान।
हरि जी से अगर हो जाए प्यार, कभी ना मन से भूले वह।
यही राह है, और बखेड़े, माया सदा ही करे ध्रेह।

13. जैसी संगति में मन रहता, वैसे ही यह कर्म कमाए।
साकत, मनमुखों की संगति, सदा बुरी है सभ को पफँसाए।
साधु की संगति है करनी, बिन कर्मो यह हाथ न आए।
प्रभु दया से संगति मिलती, इस बिन मन न चरनि समाए।
गुरबाणी पर लाए श्र(ा, गुरू शब्द से प्रीति पाए।
गुण गाए और करे प्रार्थना, संत की संगति माँगता जाए।
ढूँढे संत ना मिलता भाई, प्रभु जी आप ही संत मिलाए।

14. राम भजन बिन जो भी करना, सब काम है सदा व्यर्थ।
नाम बिना व्यर्थ सब कर्म, भम्र, भ्रांति, किसी ना अर्थ।
कर्मो का पफल जन्म मरन में, मन पाए और भटकता रहता।
यमों की सदा अधिनगी रहती, दुखों में यह अटकता रहता।
नाम बिना सब दुख ही दुख है, नाम निवास तो होए कबूल।
अन्य कर्म अच्छे भी बाध्क, ध्क्के मिलते सब पफ-ूल।
प्यार प्रभु का एक ही रास्ता, गुण गाए वह सदा कबूल।
ना गा सके तो करे प्रार्थना, अन्य कर्म सब उफल जलूल।

15. ध्र्म कमाना, ध्र्मी बनना, सतिगुर की आज्ञा में रहना।
गुरबाणी से शिक्षा लेनी, और हुक्म ना किसी का सहना।
साधु की संगति में प्रीति, कर के उस की संगति में रहना।
मेहनम से कमाना, बाँट के खाना, टेक आसरा प्रभु का लेना।
इस तरह नाम के आसरे हो कर, बाणी में जुड़ मन सुख पाए।
इस बिन सब है दुख झमेले, शब्द में जुड़ कर सुरति समाए।

सदा समाई, सदा सुख पाए, जन्म मरन की चोट ना खाए।
और ना कोई साध्न भाई, हुक्म माने वह नामि समाए।

जो भी सि(ांत दरशाए गये हैं उन का सत्यापन गुरबाणी की पंक्तियों से होता है। अगर पिफर भी कोई शंका आप के मन में प्रगट हो तो सेवक गुरबाणी की और पंक्तियां बता कर निवृत कर सकता है जी।
गुरसिख संगति की तरपफ से नाम अभ्यास करने के लिए समागम दिल्ली और पंजाब में किए जाते है। अगर आप को नाम जपने की इच्छा हो तो सेवक से संपर्क करना जी।

All the principles, mentioned above, are supported by the God's Word. If you still have any doubt, I can help you believe in these by giving more quotations from the God's Word.

The believers assemble at intervals in Delhi and Punjab and recite Naam. If you are interested in reciting Naam you are welcome to contact me.

# सूचना

यह पुस्तक गुरमति के प्रचार के लिए संगतों को मुफ्त भेट करने के लिए लिखी गई है। कोई भी व्यक्ति, संस्था, सोसाइटी, ट्रस्ट, सभा, गुरद्वारा आदि यह पुस्तक छपवा कर संगतो को मुफ्त भेट करना चाहे तो सेवक को कोई आपत्ति नहीं है। ब्लकि ऐसा करने वालों का सेवक धन्यवादी होगा। किसी को भी यह पुस्तक मूल्य बेचने की आज्ञा नहीं है जी।

अगर आप यह पुस्तक स्वयं छपवा कर संगति में ना बाँट सकें, पर इस काम में सहयोग देना चाहे, तो आप ने स्व:इच्छा अनुसार माया नीचे लिखे पते पर भेजने की कृपा करनी जी। आप माया सीधे मेरे अकाऊंट नं. DCSB 000010364, कैनरा बैंक, सैक्टर न. 35, चंडीगढ़ (भारत) में Electronically भी भेज सकते हैं जी।


सतिगुरू सेवक

**बलजीत सिंह**

आई. पी. एस. (रिटा.)

१ओ ंकार सतिसंग

1119, फेज़-1, अरबन अस्टेट, जालंधर-144022

**E-mail :- ikoankarsatsang@rediffmail.com**

**Website :- www.ikoankarsatsang.com**

**Phone :- 98152-79600**